अध्याय : 3

'आषाढ़ का एक दिन' में चित्रित कालिदास

अध्याय : 3

'आषाढ़ का एक दिन' में चित्रित कालिदास

भूमिका

संस्कृत कवि-कुलमणि कालिदास भारत-भारती के सुपुत्र हैं। उनकी काव्य-प्रतिभा ने सारे विश्व को प्रभावित किया है। हमारे हिन्दी नाटककार भी कालिदास की जीवनी और उसकी नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा से प्रभावित हुए और उन्होंने कालिदास के चरित्र को केन्द्रबिन्दु मानकर हिन्दी में कुछ नाटक लिखे हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटककारों में मोहन राकेश का "आषाढ़ का एक दिन" और सुरेन्द्र वर्मा का "आठवाँ सर्ग" हिन्दी जगत् में विशेष प्रसिद्ध हैं। ये दोनों नाटक हिन्दी जगत् में अत्यंत प्रिय लगते हैं और इन नाटककारों ने कालिदास के मिथक को नई अर्थवत्ता देकर, इतिहास की पृष्ठभूमि पर उसका मानवीय चरित्र प्रस्तुत किया है। इन दोनों नाटककारों के नाटकों में चित्रित कालिदास का सर्वांगीण विवेचन, विश्लेषण प्रस्तुत करना हमारा उद्देश्य है मोहन राकेश के "आषाढ़ का एक दिन" के कालिदास को विवेचित-विश्लेषित करना इस अध्याय का प्रतिपाद्य है।

कालिदास का जीवन-वृत्त

नाटककार मोहन राकेश ने अपने "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में कालिदास के जीवन-वृत्त संबंधी कुछ संकेत दिए हैं। ये संकेत पृष्ठभूमि के रूप में ही अपना महत्व रखते हैं।

जन्मभूमि

नाटककार मोहन राकेश ने कालिदास की जन्मभूमि के बारे में किसी विशिष्ट गाँव या प्रांत का उल्लेख नहीं किया है। तथापि इस बात का संकेत किया है

कि वह किसी पहाड़ी प्रदेश में, देहात में रहने वाला युवक है। उसका गाँव तराई, घाटी आदि से युक्त है और वहाँ वर्षा ऋतु में भारी वर्षा होती रहती है। इतना ही नहीं वह प्रदेश प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है। उस प्रदेश में आखेट के लिए मना किया जाता है।[1]

निवास

कालिदास ग्राम प्रान्तर में रहने वाला एक प्रकृति प्रेमी युवा कवि है। नाटककार मोहन राकेश ने कालिदास के निवास स्थान पर कोई प्रकाश नहीं डाला है, लेकिन इतना सूचित किया है कि मातुल उसका मामा है, और मातुल के ही घर में वह निवास करता है। मातुल की गायें चराने का काम कालिदास करता है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कालिदास मालव प्रदेश का निवासी होगा।[2]

प्रेयसी मल्लिका

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक का एक नारी पात्र मल्लिका है जो कालिदास की प्रेयसी है। कालिदास और मल्लिका के बीच एक तरह का साहचर्य प्रेम उपजता है। कालिदास और मल्लिका दोनों अपने गाँव के प्राकृतिक सौंदर्य की ओर आकृष्ट होते हैं और दोनों एक दूसरे से भावमूलक प्रेम की शृंखला में जकड़ जाते हैं। कालिदास की प्रेयसी मल्लिका इतनी भावुक है कि वह भावना में ही भावना का वरण करने वाली युवती है। वह अपनी माँ अम्बिका से कहती है - "मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है। मेरे लिए वह सम्बन्ध और सब सम्बन्धों से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल है, अनश्वर है....।"[3]

वस्तुतः उन दोनों का जो प्रेम दिखाई देता है उसमें प्रारम्भिक रूप में सात्विकता दिखाई देती है। मल्लिका कालिदास की प्रेयसी और उसके साहित्य की प्रेरणास्त्रोत है।

राजसम्मान का निमंत्रण

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक में कालिदास की जीवन रेखा के कुछ पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।एक प्रसंग में यह दर्शाया गया है कि नाटक के प्रारंभ में उज्जयिनी के सम्राट और उज्जयिनी के लोग कवि कालिदास का सम्मान करना चाहते हैं। "ऋतुसंहार" कालिदास की एक महत्वपूर्ण कृति है। यह उसकी प्रारम्भिक रचना मानी जाती है। "ऋतुसंहार" उज्जयिनी के राज्यसभा से संबंधित प्रत्येक व्यक्ति ने पढा है। इसी कारण उसकी इतनी प्रशंसा की गयी है कि उसके रचयिता का राजनीतिक सम्मान किया जाये।

यह समाचार दंतुल मल्लिका से कह देता है और साथ ही साथ बताता है कि कालिदास को राजसभा में सम्मानित किया जाने वाला है और आचार्य वररुचि इस उद्देश्य से आज ही उज्जयिनी से यहाँ आये हैं। यह समाचार सुनकर मल्लिका बहुत खुश होती है और अपनी खुशखबरी अपनी माँ को बताती है। [4]

कालिदास यह बातें इस समय नहीं सुनता है बल्कि मल्लिका अवश्य सुनती है। इस खुशखबरी से मल्लिका के हृदय मे होने वाली आनंदमयी वातावरण की हलचल लाजवाब है।

कालिदास का ग्राम-प्रेम

प्रस्तुत नाटक में विलोम-कालिदास के बीच हुए वार्तालाप में कालिदास - मल्लिका सम्बन्ध प्रमुख रहा है लेकिन साथ ही साथ राजकीय सम्मान पाने के लिए कालिदास उज्जयिनी जायेगा या नहीं इस प्रश्न पर दोनों के बीच बहस होती है और उस समय कालिदास विलोम से कहता है कि - "तुम कुछ भी अनुमान लगाने के लिए स्वतंत्र हो। मैं इतना ही जानता हूँ कि मुझे ग्राम-प्रान्तर छोडकर उज्जयिनी जाने का तनिक मोह नहीं है।"[5]

कालिदास के उपर्युक्त विचार से इस बात का पता चलता है कि कालिदास को राजकीय सम्मान के प्रति दिलचस्पी नहीं है और इसी कारण वह उज्जयिनी

नहीं जाना चाहता है। अपने ग्राम-प्रान्तर के प्रति ही उसके मन में मोह है और उज्जयिनी जाने के लिए उसका मन तत्पर नहीं है। उज्जयिनी के प्रति कालिदास निर्मोही है।

दोस्ती या दुश्मनी

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक में यह दर्शाया गया है कि विलोम बाहरी तौर से यह दिखाता है कि वह कालिदास का मित्र है लेकिन आंतरिक तौर से वह कालिदास का दुश्मन दिखाई पडता है।

कालिदास राजसम्मान पाने के लिए निमंत्रित किया गया है और वह कल ब्राह्म मुहूर्त में चला जायेगा। यहाँ विलोम बहारी तौर से कहता है कि कालिदास के उज्जयिनी जाने पर वह अपने मित्र से बिछड जायेगा। साथ ही साथ विलोम यह भी संकेत करता है कि राजधानी के वैभव में जाकर कालिदास गाँव के लोगों को क्या नहीं भूलेगा ? विलोम यह भी कल्पना करता है कि उज्जयिनी जाकर कालिदास बहुत व्यस्त हो जायेगा। वहाँ के जीवन में कई तरह के आकर्षण हैं - रंगशालाएँ, मदिरालय, और तरह-तरह की विलास-भूमियाँ।

विलोम के इस संकेत से यह स्पष्ट है कि वह कालिदास का मित्र नहीं दुश्मन ही है। विलोम और कालिदास के बीच हुए वार्तालाप से यह स्पष्ट होता है कि वे दोनों एक दूसरे के प्रतिद्वन्दी हैं। दोनों की प्रवृत्ति में महज अंतर है-

कालिदास : 'मैं जानता हूँ कि तुम कहाँ, किस समय और क्यों मेरे साक्षात्कार के लिए उत्सुक होते हो।···कहो, आजकल किस नये छन्द का अभ्यास कर रहे हो ?

विलोम : छन्दों का अभ्यास मेरी वृत्ति नहीं है।

कालिदास : मैं जानता हूँ तुम्हारी वृत्ति दूसरी है। उस वृत्ति ने सम्भवतः छन्दों का अभ्यास सर्वथा छुडा दिया है।

विलोम : आज निःसन्देह तुम छन्दों के अभ्यास पर गर्व पर सकते हो।'[6]

कालिदास का उज्जयिनी प्रस्थान

यद्यपि कालिदास अपनी प्रेयसी मल्लिका तथा ग्राम-प्रान्तर को और वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य को छोड़कर उज्जयिनी नहीं जाना चाहता है फिर भी अपनी प्रेयसी मल्लिका के अनुनय - विनय के कारण वह उज्जयिनी चला जाता है। कालिदास की प्रेयसी मल्लिका उसे बताती है कि यहाँ ग्राम-प्रान्तर में रहकर कालिदास की प्रतिभा को विकसित होने का अवसर नहीं मिल सकता है। इतना ही नहीं "नयी भूमि अर्थात उज्जयिनी उसके गाँव से अधिक संपन्न और उर्वरा होगी। नई भूमि कालिदास के व्यक्तित्व को पूर्ण बना दे सकती है।"[7]

यहाँ स्पष्ट है कि मल्लिका कालिदास को उज्जयिनी जाने के लिए प्रेरित करती है और इसी कारण कालिदास उज्जयिनी चला जाता है।

मान-सम्मान

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक में नाटककार मोहन राकेश ने यह दर्शाया है कि उज्जयिनी के सम्राट विक्रमादित्य के निमंत्रण पर और इच्छा न होते हुए भी अपनी प्रेयसी मल्लिका के अनुरोध तथा अनुनय पर कालिदास उज्जयिनी चला जाता है। वहाँ वह राजसम्मान पाता है और मातृगुप्त नाम से विभूषित होता है।

मातृगुप्त कालिदास का दूसरा नाम है। कालिदास की पत्नी प्रियंगुमंजरी भी एक स्थल पर कहती है - "अब वे (कालिदास) मातृगुप्त के नाम से जाने जाते हैं।"[8] इसमें संदेह नहीं कि कवि कालिदास के राज्याश्रित होने पर मातृगुप्त नाम से वह विभूषित हैं।

विवाह

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक में यह दर्शाया गया है कि कालिदास विवाह न करने वाला व्यक्ति था। नाटक का एक पात्र अनुस्वार के द्वारा मल्लिका को यह सूचना दी जाती है कि गुप्तवंशदुहिता परमविदुषी देवी प्रियंगुमंजरी के

साथ मातृगुप्त का विवाह हुआ है। मातृगुप्त से मतलब कालिदास से ही है। वस्तुतः एक ओर कालिदास मल्लिका से प्यार करता था और दूसरी ओर उसने प्रियंगुमंजरी के साथ विवाह किया है। कालिदास से विवाह करने की यह घटना निक्षेप को अच्छी नहीं लगती है।[9]

कालिदास के प्रति पत्नी की आस्था

कालिदास की धर्मपत्नी राजदुहिता प्रियंगुमंजरी अपने पति के प्रति आस्था रखती है। मल्लिका के प्रकोष्ठ में प्रवेश कर वह उससे कहती है कि "वह यहाँ का वातावरण कालिदास के लिए लेना चाहती है। वह इसलिए कि कालिदास को किसी भी तरह से अभाव का अनुभव न हो। वह यह भी कहती है कि कालिदास व्यर्थ में धैर्य खो देते हैं।'[10] ऐसा करने से उनका कुछ समय भी नष्ट होता है और शक्ति भी खो जाती है। वह कहती है कि कालिदास के लिए समय का बहुत मूल्य है।_

इसप्रकार हम देखते हैं कि विवाहित कालिदास के प्रति उसकी पत्नी आस्था रखती है जो उसकी कर्तव्य परायणता का एक हिस्सा है।

• मल्लिका से न मिलना

यद्यपि कालिदास उज्जयिनी से अपने गांव आता है फिर भी मल्लिका से न मिलते हुए कश्मीर जाता है। मल्लिकासे न मिलने का कारण यह है कि कालिदास को ऐसा लगता है मल्लिका की आँखें उसके अस्थिर मन को और अस्थिर कर देंगी। इसमें संदेह नहीं कि नाटक के प्रथम अंक के अंत में मल्लिका से विदा होते समय कालिदास ने यह देखा था कि मल्लिका का कालिदास के प्रति अटूट प्रेम है। उससे विदा लेते समय कालिदास को यह दिखाई पड़ा कि मल्लिका के आँखों में आँसू भर आये है और आँसुओं की धारा बह रही है। उस समय मल्लिका के हठ से निरुपाय होकर कालिदास अपना गाँव और मल्लिका को छोडकर उज्जयिनी चला जाता है। लेकिन अब कालिदास वापस अपने गाँव लौटने पर मल्लिका से इसलिए नहीं मिलता है कि उसकी आँसू भरीं आँखें उसके चंचल मन को अधिक चंचल

करेगी। और वे आँखे शायद कालिदास को गाँव में रोकने के लिए विवश करेगी।" इसलिए कालिदास मल्लिका से न मिलते हुए सपरिवार कश्मीर चला जाता है।

कालिदास की त्रासदी

नाटक के तीसरे अंक के अंत में नाटककार ने कालिदास की त्रासदी को चित्रित किया है।

यद्यपि कालिदास सपरिवार कश्मीर जाता है और वहाँ का प्रशासक बन जाता है फिर भी उसके मन में कोई विशेष आस्था नहीं रहती है। उसकामन राजनीति से उब जाता है और एक दिन कालिदास अपनी प्रेयसी मल्लिका के घर में प्रवेश करता है और अपनी कैफियत उसको बताता है। साथ ही "अथ से"[12] नयी गृहस्थी बनाने का अपना संकल्प मल्लिका को बताता है। इतने में बच्चे की रोने की आवाज सुनकर कालिदास को मालूम होता है कि उसकी प्रेयसी एक बच्ची की माँ बन चुकी है।

बच्ची को देखने के लिए मल्लिका अंदर आ जाती है तब कालिदास तुरन्त मल्लिका के घर से बाहर निकलता है और किवाड़ खोलकर चला जाता है।[13]

इसमें संदेह नहीं कि कालिदास मल्लिका से विदा होकर न उज्जयिनी में सुखी होता है न, कश्मीर में। इतना ही क्या मल्लिका के पास आने पर मल्लिका की परिवर्तित स्थिति को देखकर वह और दुःखी होता है और उसके मातृत्व को देखकर वह पूरी तरह से टूट जाता है। उसका यह टूटना उसके जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी है। विख्यात विदेशी नाटककार जी·बी·शॉ ने
नाटक में लिखा है - मानव जीवन में दो त्रासदियाँ होती है। एक यह कि वह अपने हृदय में छिपी हुई इच्छा पूरी कर सकता है और दूसरी उसे पाने के लिए असफल प्रयास करता है।"[14]

कालिदास और मल्लिका : प्रणयबंध

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक का नायक कालिदास है, और उसकी प्रेयसी मल्लिका है। वास्तव में कालिदास के साहित्य का एक प्रेरणास्त्रोत मल्लिका ही है।

साथ ही साथ मल्लिका का कालिदास के प्रति अपरिमित प्रेम है। नाटककार ने इस नाटक में इन दोनों के प्रणय बंध को मार्मिक शब्दों में संजोया और पिरोया है।

साहचर्य प्रेम

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक के प्रथम अंक के प्रारंभ में नाटककार मोहन राकेश ने यह दर्शाया है कि कालिदास और मल्लिका एक ही ग्राम-प्रान्तर में रहने वाले दो व्यक्ति हैं। इन दोनों का एक महत्वपूर्ण क्रिया-व्यापार यह है कि ये दोनों ही उस गाँव के प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रभावित होते हैं और हमेशा प्रकृति का सौन्दर्य लूटने में सहभागी होते हैं। हम देखते हैं कि नाटक के प्रारंभ में आषाढ़ के पहले दिन बारिश होती है और उस बारिश में कालिदास और मल्लिका भीग जाते हैं। और एक दूसरे के प्यार में अटक जाते हैं।

यहाँ विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि कालिदास प्रेम के बारे में विशेष कुछ नहीं बोलता है लेकिन मल्लिका जो भावुक युवती है। उस प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही साथ कालिदास की कविता के प्रति आकर्षित होती है और उससे प्यार करती रहती है। यह प्यार एक तरह से कवि या साहित्यकार के प्रति युवती का सहज साहचर्य प्रेम है। इसे "प्लेटोनिक लव थ्योरी" भी कहा जा सकता है। इसी कारण नाटक के प्रारंभ में मल्लिका स्वयं अपनी माँ अम्बिका से कहती है कि प्रकृति का सौंदर्य अपार होता है और यही सौंदर्य भी कवि को कविता करने के लिए प्रेरित करता है। कवि अपनी भावना को कविता का रूप देता है। प्राकृतिक सौंदर्य ही संवेदनशील मन को कविता का सृजन करने में सहायक होता है। उनके शब्दों में - "तभी मुझे अनुभव हुआ कि वह क्या है जो भावना को कविता का रूप देता है। मैं जीवन में पहली बार समझ पायी कि क्या कोई पवर्त-शिखरों को सहलाती मेघ-मालाओं में खो जाता है, क्यों किसी को अपने तन-मन की अपेक्षा आकाश में "बनते-मिटते चित्रों का इतना मोह हो रहता है।"[15]

आषाढ़ के पहले दिन बारिश में भीगी हुई मल्लिका कालिदास विरचित मेघदूत की कुछ पंक्तियाँ गुनगुनाती हुई मंच पर प्रवेश करती है तब प्राकृतिक सौंदर्य

के प्रति उसका आकृष्ट होना तथा कविवर कालिदास के प्रति प्रगाढ़ प्रेम रखना एक साथ नजर आता है। साहचर्य प्रेम का सुंदर उदाहरण नाटककार ने प्रस्तुत किया है और नाटक में जान भर दी है।

विवाह का प्रश्न

नाटक के प्रथम अंक के प्रारंभ में ही अम्बिका अपनी बेटी के विवाह के बारे में चिंतातुर दिखाई देती है। जब मल्लिका के सामने वह विवाह का प्रश्न उपस्थित करती है तब मल्लिका उत्तर देती है कि वह किसी के साथ विवाह नहीं करना चाहती है। इतना ही नहीं जब लोग मल्लिका और कालिदास के प्रणय-बंध के बारे में अपवाद की बाते करते हैं और अग्निमित्र के द्वारा दिये गये संदेश पर कि वे लोग इस संबंध के लिये प्रस्तुत नहीं है तब मल्लिका जोर से कहती है - "मल्लिका का जीवन उसकी अपनी सम्पत्ति है। वह उसे नष्ट करना चाहती है तो किसी को उस पर आलोचना करने का क्या अधिकार है?"[16]

मल्लिका का यह विचार किसी आधुनिक व्यक्ति-स्वातंत्र्यवादी युवती का ही विचार लगता है। नाटक के प्रारंभ में मल्लिका के विवाह संबंध में और कालिदास के प्रणय-बंध के बारे में संघर्ष दिखाया गया है। विशेषतः मल्लिका का विवाह न करने का इरादा और अम्बिका का मल्लिका को दिया जाने वाला आदेश की वह विवाह करे - बहुत संघर्ष दिखायी देता है। अम्बिका मल्लिका की भावना को उसकी आत्मवंचना कहती है। अम्बिका मल्लिका से कहती है - "तुम जिसे भावना कहती हो, वह केवल छलना और आत्म-प्रवंचना है।"[17]

फिर भी मल्लिका अपनी माँ के यथार्थ विचार को ठुकराती है और भावना में यह प्रश्न करती है कि अगर कालिदास का तुमसे भावना का संबंध है तो वह क्यों तुमसे विवाह नहीं करना चाहता ? इस संदर्भ में मल्लिका का उत्तर भी महत्वपूर्ण है। वह कहती है कि मातुल के घर में रहने वाले कालिदास की स्थिति अच्छी नहीं है। वह साधनहीन और अभावग्रस्त जीवन बिता रहा है। ऐसी हालत में विवाह की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।[18]

इस प्रकार हम देखते हैं कि मल्लिका और कालिदास में प्रणय-बंध जरूर बन गया है लेकिन दोनों विवाहबद्ध नहीं हो सकते हैं।

राजसम्मान

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक में नाटककार ने दो प्रश्न खडे किये हैं - एक प्रश्न है, कालिदास राजकीय सम्मान का स्वीकार करे या न करे और दूसरा प्रश्न है - मल्लिका को छोडकर जाये या न जाये। इन प्रश्नों के घेरों में पडा हुआ कालिदास यह उत्तर देता है कि "तुम फिर एक बार सोचो, मल्लिका। प्रश्न सम्मान और राजाश्रय स्वीकार करने का ही नहीं है। उससे कही बड़ा एक प्रश्न मेरे सामने है।"[19]

कालिदास के इस विचार से यह स्पष्ट है कि कालिदास के सामने राजकीय सम्मान का प्रश्न गौण है और मल्लिका के प्रणय सूत्र का प्रश्न प्रमुख है क्योंकि वे दोनों प्रणय सूत्र में बँधे हुए हैं।

कालिदास-मल्लिका प्रेम

वास्तव में कालिदास के साहित्य का प्रेरणास्त्रोत उसका गाँव, वहाँ का प्राकृतिक दृश्य मल्लिका ही है। इन सबको छोड़कर कालिदास उज्जयिनी नहीं जाना चाहता लेकिन मल्लिका के प्रेम के खातिर उससे विदा लेता है। मल्लिका उसे उज्जयिनी जाने के लिए प्रेरित करती है। यद्यपि कालिदास कहता है कि उज्जयिनी जाने के लिए उसके मन में उत्साह निर्माण हो सकता है। कालिदास के विदा होने से पहले मल्लिका कहती है कि यहाँ के वायु, यहाँ के मेघ और यहाँ के हिरन इन सबको कालिदास साथ ले जा सकता है और मल्लिका भी उससे दूर नहीं रह सकती है। अपने ग्राम-प्रान्तर के पर्वत शिखर पर चली जायेगी और मेघों के बीच सफर करेगी और इसी प्रकार वह मन से, हृदय से कालिदास के निकट रह जायेगी। इतना ही नहीं मल्लिका यह भी कहती है कि वह कालिदास के पीछे प्रसन्न रहेगी। वह अपने गाँव में घूमती रहेगी और हर संध्या को जगदम्बा के मन्दिर में सूर्यास्त देखने जाया करेगी।

मल्लिका कालिदास से बहुत प्यार करती है। उसे ऐसा लगता है कि कालिदास के बिछड जाने से उसे बहुत दुःख होगा लेकिन वह अपने प्रियकर के मान-सम्मान और प्रतिष्ठा को अधिक महत्व देना चाहती है और इसी कारण उसके आँखों से बहने वाले आँसुओं को रोकना भी चाहती है, लेकिन रोक नहीं पाती।[20]

मल्लिका हमेशा यह सोचती है कि कालिदास को अपनी प्रतिभा के बारे में सोचना चाहिए। उसकी प्रतिभा के बल पर कालिदास मान-सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहता है। मल्लिका की यह भी धारणा रही है कि यहाँ ग्राम-प्रान्तर में रहकर कालिदास की प्रतिभा संकुचित क्षेत्र में दबी रहेगी और उज्जयिनी जाने से वह प्रतिभा विशेष चमक उठेगी। इसलिए वह ग्राम-प्रान्तर छोडने के लिए और उज्जयिनी चले जाने के लिए विवश कर जाती है। अपने प्रियकर के मान-सम्मान को और प्रतिभा को अपने प्यार से भी अधिक महत्व देती है।

कालिदास से विदा लेने के उपरान्त मल्लिका के आँखों में आँसू जम जाते हैं, और जिन आँसुओं को वह रोकना चाहती थी, वे बहने लगते हैं। आंग्ल कवि टेनिसन ने सच ही कहा है - प्रेम का सर्वोच्चांक अश्रु हैं।"[21]

इसमें संदेह नहीं कि मल्लिका के प्रेम के खातिर ही कालिदास अपनी प्रेयसी से विदा होकर उज्जयिनी चला जाता है। मल्लिका का कालिदास के प्रति अटूट प्रेम है और कभी कभी यह प्रेम ही किसी व्यक्ति को ऐसी जगह भेज देता है जहाँ वह जाना नहीं चाहता है।

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक में कालिदास और मल्लिका के प्रणय-बंध को दिखाकर यह दर्शाया है कि कालिदास का व्यक्तित्व बनाने में और उस व्यक्तित्व को खंडित करने में मल्लिका का योगदान सहज ही दिखाई देता है। नाटक के प्रथम अंक में कालिदास का ग्राम प्रान्तर छोडकर उज्जयिनी जाना उसके भावी खंडित व्यक्तित्व का ही द्योतक है।

कालिदास के प्रति मल्लिका का प्रेम

नाटक के दूसरे अंक के अंत में यह दर्शाया गया है कि यद्यपि कालिदास उज्जयिनी से ग्राम-प्रान्तर मे आकर भी अपनी प्रेयसी मल्लिका से नहीं मिलता है तो भी मल्लिका के मन में उसके प्रति दृढ प्रेम है। क्योंकि कालिदास के पुनश्च उज्जयिनी जाने से कालिदास के प्रति किसी भी प्रकार के पूरे शब्द अपने मुँह से नहीं निकालती है। बल्कि एक जीवित प्राणी होने के कारण अपने अंदर ही अंदर टूट जाती है और उसकी आँखो से अश्रुधारा निकलती है। मल्लिका के आँखों से बहने वाली यह अश्रुधारा कालिदास के प्रति उस विरहिणी की दृढ़ प्रेमभावना है। जिस प्रकार नाटक के प्रथम अंक के अंत में वह कालिदास के उज्जयिनी जाने पर रोती है और अपनी विरह व्यथा तथा अपना प्रेम प्रकट करती है उसी प्रकार नाटक के दूसरे अंक के अंत में ही उसकी मनःस्थिति को और प्रेम को दर्शाया गया है।

भरा हुआ भाव कोष्ठ

कालिदास की उज्जयिनी जाने पर और कुछ साल बीत चुकने पर भी मल्लिका की दिनचर्या पूर्ववत ~~रमी~~ रहती है। वह आज भी पर्वत-शिखर पर जाकर मेघ मालाओं की ओर देखती है। कालिदास रचित 'मेघदूत' और 'ऋतुसंहार' की पंक्तियाँ पढती है। यद्यपि वह अभावग्रस्त है, फिर भी उज्जयिनी से आने वाले व्यापारियों से वह स्वयं दरिद्रता में भी कालिदास रचित ग्रन्थों को खरीदती है और सभी प्राप्त ग्रंथों को अपने गिरे-टूटे प्रकोष्ठ में रखती है,ग्रंथ पढ़ती है। इसमें संदेह नहीं कि कालिदास के प्रति उसके मन में वही भाव है जो पहले था। इसलिए वह कहती है कि वह अपने भाव के कोष्ठ को कभी रिक्त नहीं होने देती है।[22]

कोरे पृष्ठ - महाकाव्य रचना

कालिदास के उज्जयिनी और कश्मीर जाने पर सबसे बुरा असर अगर किसी पर पड़ा हो तो मल्लिका पर ही। कालिदास का मल्लिका पर गहरा प्रभाव दिखाई पडता है। यद्यपि कालिदास अपना ग्राम-प्रान्तर छोड़ गया है और उसने प्रियंगुमंजरी के साथ विवाह किया है फिर भी मल्लिका के हृदय में कालिदास प्रतिष्ठित है वह हमेशा इतना ही सोचती रहती है कि कालिदास एक से बढकर एक ग्रंथों की रचना

करता रहे और उन रचनाओं में मल्लिका का अस्तित्व में भी अप्रत्यक्षतया बना रहे। मल्लिका के शब्दों में - "मैं यद्यपि तुम्हारे जीवन में नही रही, परन्तु तुम मेरे जीवन में सदा बने रहे हो। मैंने कभी तुम्हें अपने से दूर नहीं होने दिया। तुम रचना करते रहे, और मैं समझती रही कि मैं सार्थक हूँ, मेरे जीवन की भी कुछ उपलब्धि है।"[23]

इतना ही नहीं कालिदास को ग्रंथ लिखने की सुविधा हो इसलिए वह स्वयं भोजपत्रों का एक कोरे पृष्ठों का ग्रंथ बना देती है और इच्छा करती है कि कालिदास उन कोरे पृष्ठों पर एक महाकाव्य की रचना करे। जब कालिदास कश्मीर से वापस लोटकर मल्लिका के यहाँ आ जाता है और उन सीये हुए पत्रों को उलट-पुलट कर देखता है तब उसे यह दिखाई देता है कि यह पृष्ठ कोरे नहीं हैं बल्कि ये पृष्ठ स्वेद-कणों से मैले हुए हैं कुछ स्थानो पर फूलों की सुखी-पत्तियों ने अपने रंग इन पर छोड दिये हैं। इन स्थानों पर ऐसा भी दिखाई देता है कि उसने अपने नखों से ये पृष्ठ छिले हैं। मल्लिका के दाँतों ने कुछ पृष्ठों को काटा है और कालिदास को ऐसा प्रतीत होता है कि ये पृष्ठ अब कोरे नहीं; बल्कि इन पर एक महाकाव्य की रचना हो चुकी है और इस महाकाव्य के सर्ग अनंत हैं। इन पृष्ठों पर अब नया कुछ भ नहीं लिखा जा सकता। कालिदास और मल्लिका के बीच हुए वार्तालाप से यह बात स्पष्ट हो जाती है । यथा -

मल्लिका : ये पन्ने अपने हाथों से बनाकर सीये थे। सोचा था तुम राजधानी से आओगे, तो मैं तुम्हें यह भेंट दूँगी। कहूँगी कि इन पृष्ठों पर अपने सबसे बड़े महाकाव्य की रचना करना। परन्तु उस बार तुम आकर भी नहीं आये और यह भेंट यही पड़ी रही। अब तो ये पन्ने टूटने भी लगे हैं, और मुझे कहते संकोच होता है कि ये तुम्हारी रचना के लिए हैं।

कालिदास : तुमने ये पृष्ठ अपने हाथों से बनाये थे कि इन पर मैं एक महाकाव्य की रचना करूँ। स्थान-स्थान पर इन पर पानी की बूँदे पडी हैं जो निःसंदेह वर्षा की बूँदे नही हैं। लगता है तुमने अपनी आँखों से

इन कोरे पृष्ठों पर बहुत कुछ लिखा है। और आँखों से ही नहीं, स्थान-स्थान पर ये पृष्ठ स्वेद-कणों से मैले हुए हैं, स्थान-स्थान पर फूलों की सूखी पत्तियों ने अपने रंग इन पर छोड़ दिये हैं। कई स्थानों पर तुम्हारे नखों ने इन्हें छीला है, तुम्हारे दाँतों ने इन्हें काटा है। और इसके अतिरिक्त ये ग्रीष्म की धूप के हल्के-गहरे रंग हेमन्त की पत्रधूलि और इस घर की सीलन...ये पृष्ठ अब कोरे कहाँ हैं मल्लिका? इन पर एक महाकाव्य की रचना हो चुकी है...अनन्त सर्गों के एक महाकाव्य की।[24]

<u>प्रणय-प्रतारणा</u>

नाटककार मोहन राकेश ने "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में यह संकेत दिया है कि मल्लिका से प्यार करने वाला और एक व्यक्ति इस नाटक में है और वह विलोम है। जहाँ मल्लिका और कालिदास के बीच प्रणय-बंध का सूत्र दिखाई देता है वहाँ विलोम मल्लिका को पाने के लिए हमेशा तड़पता रहता है। कालिदास के उज्जयिनी और कश्मीर जाने से मल्लिका कालिदास के प्रति अपना अटूट प्रेम रखते हुए अपना एकाकी जीवन बिताती है।

नाटक के दूसरे अंक में मल्लिका की माँ की मृत्यु संकेतित की गयी है। नाटक के तिसरे अंक में यह दर्शाया गया है कि मल्लिका को पाने के लिए तडपने वाला विलोम आखिर उसे पाता है। निराश्रित मल्लिका के प्रकोष्ठ में वह निवास करता है और पति के रूप में रहता है। नतीजा यह होता है कि मल्लिका एक बच्ची की माँ बन जाती है। कालिदास एक बार उज्जयिनी से अपने गाँव आकर भी मल्लिका से नहीं मिलता है और वहाँ से होकर सपरिवार कश्मीर चला जाता है। मल्लिका अपने प्रेमी कालिदास के दर्शन के लिए लालायित होती है। लेकिन कालिदास के चले जाने पर दुःखी होता है लेकिन कालिदास के प्रति अपना भाव रखती है। उस समय कालिदास विलोम से भी नहीं मिलता है। इसप्रकार हम देखते है कि मल्लिका कालिदास के विरह में अन्दर ही अन्दर टूट जाती है और विलोम

से वह एक बच्ची की माँ बनती है।

भावना का भावना में वरन स्वीकारने वाली मल्लिका को आखिर यथार्थता का ही मुकाबला करना पडता है। भावना पर यथार्थ हावी हो जाता है। फिर भी मल्लिका कालिदास के प्रति अपना प्रेम बनायें रखती है।

नाटक के तीसरे अंक में यह दर्शाया गया है कि वह तीव्र गती से अंदर के द्वार के पास जाकर किवाड़ खोल देती है और पालने की ओर संकेत करती हुई अपने मन में कालिदास को पुकारती हुई कहती है - "इस जीव को देखते हो ? पहचान सकते हो ? यह मल्लिका है जो धीरे-धीरे बडी हो रही है और माँ के स्थान पर अब मैं इसकी देखभाल करती हूँ। ···यह मेरे अभाव की सन्तान है। जो भाव तुम थे, वह दूसरा नहीं हो सका, परन्तु अभाव के कोष्ठ में किसी दूसरे की जाने कितनी-कितनी आकृतियाँ हैं। जानते हो मैंने अपना नाम खोकर एक विशेषण उपार्जित किया हे और जब मैं अपनी दृष्टि में नाम नहीं, केवल विशेषण हूँ।[25]

इतना ही नहीं वह यह भी कहती रहती है कि दरिद्रता ही एक ऐसी समस्या है कि उसको कभी छिपाया नहीं जा सकता और यह दरिद्रता ही मनुष्य के सैकडों गुणों को नष्ट कर देती है। मल्लिका के शब्दों में - "परन्तु दारिद्रय नहीं, छिपता। सौ-सौ गुणों में भी नहीं छिपता। नहीं, छिपता ही नहीं, सौ-सौ गुणों को छा लेता है - एक एक करके नष्ट कर देता है।"[26]

उसे इस बात का भी दुःख होता है कि कालिदास संन्यास ले चुका है कश्मीर जाने के बाद वहाँ की राजनीतिक परिस्थिति से ऊबकर कालिदास ने संन्यास लिया है ऐसी अफवा उठ जाती है। तब भी मल्लिका कालिदास के प्रति अपना प्रेम अलग शब्दों में व्यक्त करती है। मल्लिका के शब्दों में - "नहीं, तुम काशी नहीं गये। तुमने संन्यास नहीं लिया। मैंने इसलिए तुमसे यहाँ से जाने के लिए नहीं कहा था। ····मैंने इसलिए तुमसे यहाँ से जाने के लिए नही कहा था।···मैंने इसलिए भी नहीं कहा था कि तुम जाकर कही का शासन भार सँभालो। फिर भी

जब तुमने ऐसा किया, मैंने तुम्हें शुभकामनाएँ दी - यद्यपि प्रत्यक्ष तुमने वे शुभकामनाएँ ग्रहण नहीं की।

इससे स्पष्ट हे कि यद्यपि कालिदास मल्लिका के प्रेम की प्रतारणा करता हुआ दिखाई देता है। फिर भी मल्लिका भावात्मक रूप में उससे प्यार ही करती रहती है। बच्ची को जन्म देना मल्लिका की विवशता है और कालिदास से विवाह न करके उसके प्रणय-बंध में जुडे रहना उसके हृदय की विशालता ही है। इस समय कालिदास और विलोम के बीच प्रथम अंक में हुए वार्तालाप की सहज ही याद आ जाती है और विलोम और कालिदास के चरित्र-चित्रण की विभाजन रेखा सहज ही दृष्टिगोचर होती है। विलोम के शब्दों में - "विलोम क्या है ? एक असफल कालिदास। और कालिदास ? एक सफल विलोम। हम कहीं एक-दूसरे के बहुत निकट पडते हैं।"[27]

नाटक के तीसरे अंक में यह दर्शाया गया है कि कालिदास कश्मीर की राजनीति से ऊबकर मल्लिका के यहाँ आ जाता है और अपनी कैफियत उसके सामने प्रस्तुत करता है। मल्लिका सुनती रहती है। अपनी कैफियत सुनाते हुए कालिदास पुनश्च नया जीवन शुरू करने की बात कहता है और बच्ची की रोने की आवाज सुनकर उसे यथार्थ मालूम हो जाता है और मल्लिका बच्ची को देखने के लिए अंदर जाती है। इतने में कालिदास जिस रास्ते से आता है उस रास्ते से ही तीव्र गति से चला जाता है। मल्लिका बच्ची को लेकर बाहर आती है और कालिदास जाने पर जोर से पुकारती है, कालिदास...।

नाटक के अंत में स्पष्ट हो जाता है, मल्लिका और कालिदास का जो प्रेम भावनात्मक था उसमें विलोम का प्रवेश होकर एक ऐसा प्रेम-त्रिकोण जुड़ जाता है कि मल्लिका के सच्चे प्रेम को आखिर कालिदास पलायन करके ठुकराता है ओर मल्लिका के शरीर पर अधिकार करने वाला विलोम दिन भर शराब पीकर बाहर भटकता रहता है और मल्लिका का प्यार कभी भी पा नहीं सकता है। इसप्रकार नाटककार ने इस प्रेम-त्रिकाण को दर्शाकर आदर्श और यथार्थ का संघर्ष दिखाकर तीनों पात्रों मल्लिका, कालिदास, विलोम की त्रासदी ही दिखाई है जो

मल्लिका कालिदास के साहित्य की प्रेरणा बनकर अपने प्रणय बंध से कालिदास दूर रहने पर भी अपने हृदय में कालिदास को रखती है। लेकिन कालिदास हमेशा के लिए उसे छोडकर चला जाता है।

कालिदास का मल्लिका के यहाँ आगमन क्षणिक बन जाता है। उसकी विशालता खंडित हो जाती है और मल्लिका के सामने रोने के सिवा और कोई चारा नही रहता है। यही त्रासदी है, यही विडंबना है। इस समय हमे प्रसादजी की कामायनी की कुछ पंक्तियाँ सहज ही स्मरण हो जाती हैं -

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न हैं
इच्छा क्यों पूरी हो मन की
एक दूसरे से न मिल सकें
यह विडंबना है जीवन की।"[28]

यहाँ कालिदास के व्यक्तित्व की दृष्टि से देखा जाय तो कालिदास एक दुर्बल व्यक्ति है।

कालिदास और राजनीति

वास्तव में कालिदास संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ कवि और नाटक्कार के रूप में विश्वविख्यात हैं। साहित्य साधना उसका स्थायीभाव है, फिर भी परिस्थितिवश वह राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश करता है। उसका यह प्रवेश जहाँ एक ओर उसे सम्मान के शिखर पर पहुँचाता है वहाँ दूसरी ओर उसे खाई में धकेल भी देता है। इसकी वजह से कालिदास की विचित्र और दयनीय स्थिति हमें नाटक में दिखाई देती है।

हरिणशावक पर अधिकार

राजनीति की दृष्टि से "आषाढ़ का एक दिन" नाटक के प्रथम अंक में आहत हरिण-शावक के अधिकार पर प्रकाश डालने का प्रयास नाटक्कार ने किया है और राजपुरूषों के अधिकार और ग्रामीण जनता की संवेदना पर सोचा गया है। यहाँ नाटक्कार ने कालिदास के अलग व्यक्तित्व का परिचय कराया है। दंतुल उज्जयिनी से आया हुआ एक राजपुरूष है। वह कालिदास के गाँव में प्रवेश कर आखेट के

बहाने एक हरिणशावक के बाण से आहत करता है और उस हरिणशावक को अपनी अर्जित, सम्पत्ति मानता है। लेकिन कालिदास दंतुल के इस प्रस्ताव को ठुकराता है और बताता है कि यह शावक पार्वत्य-भूमि की सम्पत्ति है और कालिदास आदि इस भूमि पर निवासी हैं। अतः हरिणशावक पर, इस भूमि पर कालिदास का अधिकार है।[29] इतना ही नहीं कालिदास आहत हरिणशावक को तल्प या आस्तरण पर रखना चाहता है और उसे विश्राम देना चाहता है। लेकिन अम्बिका कहती है कि "तल्प और आस्तरण मनुष्यों के सोने के लिए हैं, पशुओं के लिए नहीं।"म30

कालिदास इस हरिण शावक को मल्लिका के हाथ से लेकर अपनी बाहों में ले लेता है और अपने घर बिना रुके या दंतुल की ओर देखे ड्योढी में चला जाता है। और दंतुल को मालूम हो जाता है कि, हरिणशावक पर अधिकार जताने वाला और कोई नहीं स्वयं कवि कालिदास ही है।

राजकीय सम्मान के प्रति उदासीनता

नाटककार मोहन राकेश ने कालिदास का चरित्र-चित्रण खींचते समय एक महत्वपूर्ण बात सबक सामने रखी है कि कालिदास राजकीय सम्मान के प्रति प्रथमतः उदासीन दिखाई पडता है।

सम्राट विक्रमादित्य के आदेश पर आचार्य वररुचि और अन्य राजदरबार के कर्मचारी देहात आते हैं। लेकिन कालिदास अपने मातुल के घर में निवास करता है। मातुल कालिदास को उसके राजसम्मान के बारे में जानकारी देता है। लेकिन उस समय कालिदास खुश होने के बजाय एक तरह से उदासीन बन जाता है और राजनीतिक सम्मान को ठुकराने की कालिदास की बात को मातुल अम्बिका के पास निम्नांकित शब्दों में व्यक्त करता है - "एक तरह से राज्य की ओर से हमारे वंश का सम्मान किया जा रहा है, और वे वंशावतंस कहते हैं,"मुझे यह सम्मान नहीं चाहिए···।" "मैं राजकीय मुद्राओं से क्रीत होने के लिए नहीं हूँ।"[31]

यहाँ नाटककार मोहन राकेश ने यह दर्शाया है कि कोई भी सच्चा कलाकार या साहित्यकार स्वाभिमानी होता है। उसके साहित्य में उसकी आत्माभिव्यक्ति सर्वप्रमुख रहती है। वह किसी राजा या सम्राट का खरीदा हुआ दास नहीं बनना चाहता

है।

नाटक का नायक कालिदास जरूर गरीब है। उसके पास जीने के लिए आवश्यक साधन-संपत्ति नहीं है। फिर भी वह स्वाभिमानी है। कालिदास का यह मत सच्चे साहित्यकार का प्रतिफलन है।

राजकवि का ग्राम प्रदेश

राजकवि के रूप में कालिदास का अपने ग्राम में प्रवेश करना और वहाँ के लोगों का उत्साहित हो जाना एक विशेष बात है। कालिदास का आगमन उसके ग्राम प्रदेश के लोगों के जीवन का सबसे बड़ा उत्सव बन जाता है। पशुपालन मे व्यस्त रहने वाले यहाँ के लोग अपने पशुओं की चिंता अब नहीं करते हैं। वे कालिदास के साथ आये हुए अतिथियों के लिए भोज्य और पेय सामग्री जुटाने में व्यस्त हैं। इतना ही नहीं राज परिवार, के साथ आये हुए राजधानी के कलाकार यहाँ की हर वस्तु की अनुकृतियाँ बनाते घूम रहे हैं। यहाँ का कोई पेड, कोई पत्ता कोई तिनका सबकी अनुकृतियाँ बनाकर ये कलाकार ले जाते हैं। इतना ही नहीं यहाँ के पत्थर तक बटोर कर ले जाते हैं।

कालिदास की काव्यप्रतिभा, राजदुहिता, प्रियंगुमंजरी के साथ उसका हुआ विवाह आदि बाते कालिदास के ग्राम के लोगों को इतनी प्रभावित करती हैं कि उन्हें ऐसा लगता है कि राजधानी से आये हुए सब अतिथियों का जमघट और यहाँ का निसर्गरम्य वातावरण यहाँ के लोगों के लिए मानो "उत्सव"[32] बन गया है।

राजनीति से वितृष्णा

नाटक्कार मोहन राकेश ने "आषाढ़ का एक दिन" नाटक के तीसरे अंक में यह दर्शाया है कि कालिदास उज्जयिनी से सीधे कश्मीर जाना चाहता था। लेकिन वह बीच में अपने गाँव आता है क्योंकि उसे अपने गाँव के प्रति मोह निर्माण होता है। उसे ऐसा लगता है कि वह अपने ग्रामप्रान्तर को देखे। वहाँ की पर्वत शृंखला और वहाँ की उपत्यकाएँ उसके सामने एक मूक प्रश्न का रूप ले लेगी।

कालिदास स्वयं कहता है कि उसके गाँव आने पर उसके गाँव वालों ने जो उत्सव का रूप दिया यह बात कालिदास को खटकती है और पहली बार कालिदास के मन में राजनीति के प्रति वितृष्णा निर्माण होती है और उसे ऐसा लगता है कि राजाश्रित कवि बनना अच्छा नहीं है लेकिन वह उस समय मुक्त नहीं हो सकता है इसका उसे अफसोस है।

राजनीति में निरूपाय प्रवेश

नाटककार मोहन राकेश ने नाटक के दूसरे अंक मे कालिदास का राजनीति में जो प्रवेश हुआ है उसकी ओर संकेत किया है। स्वयं कालिदास यहाँ अपने राजनीति के प्रवेश के बारे में कुछ नहीं बोलता है लेकिन उसकी पत्नी राजदुहिता परमविदुषी प्रियंगुमंजरी मल्लिका के घर आने पर उसे कालिदास की साहित्यिक और राजनीतिक जीवन के बारे में कुछ बाते कह देती है। प्रियंगुमंजरी राजनीति और साहित्य में फर्क करती है। वह कहती है कि राजनीति में समय का विशेष महत्व है और राजनीति में पडे हुए व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पडता है। प्रियंगुमंजरी के शब्दों में - "राजनीति साहित्य नहीं है। उसमें एक-एक क्षण का महत्व है। कभी एक क्षण के लिए भी चूक जाए , तो बहुत बडा अनिष्ट हो सकता है। राजनीति जीवन की धुरी में बने रहने के लिए व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पडता है।" [33]

इसमें संदेह नहीं कि, कालिदास का प्रियंगुमंजरी के साथ विवाह होने पर वह उसका अच्छी तरह से खयाल रखती है। उसे ऐसा लगता है कि अब कालिदास राजनीति में सफल हो जाये और इस सफलता में उसे न्यूनता या अभाव का अनुभव न हो। प्रियंगुमंजरी के निम्नांकित विचार उल्लेखनीय हैं -

"साहित्य उनके {कालिदास के} जीवन का पहला चरण था। अब वे दूसरे चरण में पहुँच चुके हैं। मेरा अधिक समय इसी आयास में बीतता है कि उनका बढ़ा हुआ चरण पीछे न हट जाय।....बहुत परिश्रम पड़ता है इसमें।" [34]

यहाँ एक बात स्पष्ट है कि प्रियंगुमंजरी कालिदास से दिलोजान से प्यार करती है और अपने पति की प्रतिष्ठा और बढ़ जाय इस दृष्टि से प्रयत्नशील रहती है

लेकिन हम देख सकते हैं कि कालिदास जैसा असाधारण प्रतिभाशाली कवि और नाटककार राजनीति में बिलकुल रुचि नहीं लेता है। केवल परिस्थितियों में से गुजरने का असफल प्रयास करता है।

कश्मीर का असफल प्रशासक

कालिदास मुख्यतया प्रतिभा संपन्न कवि और नाटककार हैं। उसका 'ऋतुसंहार' काव्य-ग्रंथ पढ़कर विक्रमादित्य प्रभावित हुए और उन्होंने कालिदास को उज्जयिनी बुलाकर उसका सम्मान किया। कालिदास की राजकवि के रूप में ख्याति हुई है। लेकिन साथ ही साथ राजा विक्रमादित्य कालिदास की कश्मीर के प्रशासक के रूप में नियुक्ति करता है जब राजदुहिता प्रियंगुमंजरी मल्लिका के घर आ जाती है तब वह राजनीति के बारे में, कालिदास के बारे में उसे बताती है और यह भी कहती है कि कश्मीर संकटापन्न प्रदेश है। अनेक प्रकार की समस्याएँ वहाँ निर्माण हुई हैं। अगर हम कश्मीर छोडकर यहाँ रहेंगे तो और संकट निर्माण हो सकते हैं और वहाँ की कठिनाइयों का मुकाबला करना और कठिन होगा क्योंकि कश्मीर की राजनीति अस्थिर है।

प्रियंगुमंजरी यह भी कहती है कि कश्मीर के सौंदर्य की काफी चर्चा हुई है। लेकिन वह सौंदर्य देखने के लिए हमारे पास समय नहीं है।

इससे स्पष्ट है कि कवि कालिदास कवि के साथ ही साथ कश्मीर का प्रशासक बन गया है जो मोहन राकेश प्रणीत कवि के मूल व्यक्तित्व के खिलाफ हैं।

नाटक के तीसरे अंक में कालिदास स्वयं मल्लिका को बताता है कि उसका मन राजनीति में बिलकुल नहीं रमा।[35] कश्मीर के प्रशासक के रूप में वह असफल बन जाता है।

<u>कश्मीर जाना और छोडना {अभावग्रस्तता}</u>

नाटककार मोहन राकेश ने कालिदास के मुँह से यह दर्शाया है कि कालिदास को अपने अभावपूर्ण जीवन को बदलने की इच्छा थी। उसे ऐसा लगता था कि दरिद्रता या अभाव के कारण ही मनुष्य को दुःख सहना पडता है और उसकी भर्त्सना भी की जाती है।

कालिदास यह भी स्पष्ट करता है कि अभावपूर्ण जीवन से ऊब जाने के कारण वह जीवन को दूर करने के लिए उसके मन में प्रतिशोध की भावना बलवती हो उठी। इसी कारण उसने निरूपाय के रूप में कश्मीर जाना आवश्यक समझा। कालिदास के शब्दों में - "अभावपूर्ण जीवन की वह एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी। सम्भवतः उसमें कही उन सबसे प्रतिशोध लेने की भावना भी थी जिन्होंने जब-तब मेरी भर्त्सना की थी, मेरा उपहास उड़ाया था।"[36]

इसप्रकार कालिदास की अभावग्रस्तता को दूर करने के तथा सुख पाने की इच्छा से ही उसने कश्मीर प्रयाण किया। कालिदास का यह प्रयाण उसके भौतिक प्रतिष्ठित सुखमय जीने की लालसा या भोगलालसा या मोहग्रस्तता का ही द्योतक है।

नाटक के तीसरे अंक के प्रारंभ में नाटककार ने मातुल के मुँह से कालिदास की परिवर्तित स्थिति का परिचय दिया है। बात यह है कि सम्राट का निधन हो गया है। कश्मीर में विद्रोह शक्तियाँ प्रबल हुई हैं और कालिदास ने भी कश्मीर छोड़ दिया है।

इससे स्पष्ट है कि एक श्रेष्ठ कवि और नाटककार कालिदास की, साहित्य-साधना में जितनी रुचि है, उतनी कश्मीर के प्रशासक होने में नहीं है। अतः कालिदास कश्मीर के प्रशासक का पद छोड़ आखिर अपनी प्रेयसी मल्लिका के पास आ जाता है। वहाँ भी उसे यह महसूस होता है कि मल्लिका का जीवन बदल गया है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है इस बात का एहसास उसे हो जाता है।

न बदल न सुख

यद्यपि कालिदास अपने अभाव को दरिद्रता को नष्ट करने के लिए और प्रतिष्ठा तथा सुख पाने के लिए कश्मीर चला जाता है लेकिन वह सुखी नहीं होता है। कालिदास के मन में यह भावना बनी रही थी कि वह खुद को बदल ले और सुखी हो सके परंतु ऐसा नहीं होता है। कालिदास स्वयं कहता है - "न तो मैं बदल सका और न सुखी हो सका। अधिकार मिला, सम्मान बहुत मिला, जो कुछ मैंने लिखा उसकी प्रतिलिपियाँ देश भर में पहुँच गयी, परन्तु मैं सुखी नहीं हुआ।"[37]

कश्मीर में कालिदास सुखी न होने का एक प्रमुख कारण है कि उसका राजनीति के क्षेत्र में अनधिकृत प्रवेश कालिदास वास्तव में एक महान कवि, एक महान नाटककार या एक महान साहित्यकार के रूप में ही स्थान पा चुका था। ऐसे श्रेष्ठ कवि नाटककार या साहित्यकार की प्रकृति राजनीति में रस लेने की नही थी। कालिदास का कार्यक्षेत्र साहित्यकार था, राजनीतिज्ञ का नहीं। इसलिए कालिदास को बार-बार अनुभव होता रहता था कि उसने प्रभुता और सुविधा के मोह से राजनीति के क्षेत्र में अनाधिकार प्रवेश किया है। साहित्यकार के रूप में जिस विशाल क्षेत्र में उसे रहना चाहिए था उससे वह हट आया है। उसे यह महसूस होता है कि वह उस विशाल से अर्थात साहित्यकार से दूर हो गया है। कालिदास के शब्दों में - "एक राज्याधिकारी का कार्यक्षेत्र मेरे कार्यक्षेत्र से भिन्न था। मुझे बार-बार अनुभव होता है कि मैंने प्रभुता और सुविधा के मोह में पडकर उस क्षेत्र में अनाधिकार प्रवेश किया है, और जिस विशाल में मुझ रहना चाहिए था उससे दूर हट आया हूँ।"[38]

इससे स्पष्ट है कि जो साहित्यकार द्विधा अवस्था में जीवन-यापन करने की कोशिश करता है वह कभी अपने जीवन में कामयाब नहीं हो सकता। कालिदास की यही शोकांतिका है।

व्यर्थता का एहसास

नाटककार मोहन राकेश ने "आषाढ़ का एक दिन" नाटक के तीसरे अंक में यह दर्शाया है कि साहित्यकार का राजनीति में अनधिकृत प्रवेश उसके विनाश का कारण बन जाता है। कभी-कभी उस साहित्यकार के बारे में कुछ अफवायें भी फैलायी जाती हैं। प्रस्तुत नाटक में इस बात का उल्लेख किया गया है कि राजनीति से ऊबकर कालिदास ने संन्यास लिया है लेकिन जब कालिदास कश्मीर से वापस लौटकर मल्लिका से मिलता है तब उसको बताता है कि उसने संन्यास नहीं लिया है।

कालिदास के मन में यह भी आशा पैदा होती है कि वह एक न एक दिन फिर अपने गाँव वापस आयेगा और अपनी व्यथा, अपना द्वंद्व मल्लिका को समझा देगा।

लेकिन अब कालिदास को यह भी महसूस होता है कि द्वंद्व एक ही व्यक्ति तक सीमित नहीं होता, परिवर्ततन एक ही दिशा को व्याप्त नहीं करता। अब कालिदास एक टूटे हुए, हारे हुए व्यक्ति के रूप में घर में प्रवेश करता है। उस घर में और मल्लिका में हुए परिवर्तन को देखकर उसे बहुत व्यर्थता [39] का ही बोध होता है।

कालिदास की साहित्य-साधना

संस्कृत का अभिजात्य साहित्य केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में विख्यात हैं। संस्कृत में अभिजात्य साहित्य की बड़ी लंबी परंपरा दिखायी देती है।

महाकवियों में कालिदास के अलावा अश्वघोष ﴾बुद्धचरित, सौन्दरानन्द तथा शारिपुत्र प्रकरण ﴾शारद्वतीपुत्र प्रकरण﴿﴿, भारवि ﴾किरातार्जुनीय﴿, भट्टी ﴾रावणवध﴿ माघ ﴾शिशुपाल वध﴿, श्रीहर्ष ﴾नैषधीय चरित﴿, जयदेव - ﴾गीतगोविन्द﴿ आदि कवियों का आदर के साथ उल्लेख किया जा सकता है।

संस्कृत नाटककारों में कालिदास के अतिरिक्त भास {स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञा-योगंधरायण, बालचरित, पंचरात्र, प्रतिमा, अविमारक और दरिद्रचारूदत्त}, क्षुद्रक

हर्षवर्धन {प्रियदर्शिका, रत्नावली नागानन्द}, भवभूति {मालती माधव, महावीर चरित, उत्तर रामचरित}, मुरारी {अनर्घराघव}, विशाखदत्त {मुद्राराक्षस}, आदि नाटककारों का योगदान अक्षुण्ण है।

कालिदास मुख्यतया कवि और नाटककार के रूप में विशेष विख्यात हैं। कवि की रचनाओं का कालक्रम संभवतः इसप्रकार है - काव्यों में 1·ऋतुसंहार, 2·मेघदूत, 3·रघुवंश और 4·कुमारसंभव।
नाटकों में - "मालविकाग्निमित्र", "विक्रमोर्वशीय", और "अभिज्ञानशाकुन्तल"।

इन रचनाओं के कारण कालिदास की गणना विश्व के सर्वश्रेष्ठ कवियों और नाटककारों में होती है। कालिदास के श्रेष्ठत्व में उनकी प्रतिभा और साधना विशेष महत्वपूर्ण है।

नाटककार मोहन राकेश ने "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में मुख्यतया कालिदास के साहित्य के प्रेरणास्त्रोत तथा उसके कुछ काव्यग्रंथों का उल्लेख कुछ स्थलों पर किया है, जिससे कालिदास की साहित्य-साधना पर कुछ मात्रा में प्रकाश पडता है।

साहित्य के प्रेरणास्त्रोत

यद्यपि कवि या लेखक साहित्य का सृजन करता है जो उसकी भावयत्री और कारयत्री प्रतिभा का मणिकांचन योग है फिर भी उसके पीछे उसके साहित्य के प्रेरणास्त्रोंत भी महत्वपूर्ण होते हैं। संस्कृत कवि और नाटककार कालिदास के मुख्यतया दो प्रेरणास्त्रोंतो ' की ओर नाटकाकर मोहन राकेश ने संकेत किया है।

कालिदास के साहित्य का प्रेरणास्त्रोत- 1·उसकी जन्मभूमि है, जो प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है और 2·उसकी सौंदर्यसंपन्न प्रेयसी मल्लिका है।

प्राकृतिक सौंदर्य और नारी सौंदर्य

यद्यपि कालिदास मल्लिका से प्यार करता है फिर भी उसके मन में अपनी मातृभूमि के प्रति और वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति अपार प्रेम है। कालिदास मल्लिका से स्पष्ट कहता है कि उसे अपनी मातृभूमि अधिक प्यारी है। उसके ग्रामप्रान्तर मे वह अनेक सूत्रों से जुड गया है। उसका वास्तविक भूमि उसका गाँव है। वह अपनी प्रेयसी मल्लिका तथा, अपने गाँव की बिखरी हुई पर्वत श्रेणियाँ, उसके सम्मुख दिखाई देने वाले, आसमान में घिरने वाले बादल वहाँ की हरी-भरी धरती, वहाँ के हरिण-शावक और वहाँ के पशुपाल के प्रति कालिदास के मन में अगाध प्रेम है।

कालिदास का अपने प्रेयसी मल्लिका और अपने गाँव के प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति जो उत्कट लालसा है वह एक सच्चे कवि के हृदय की सच्ची तलाश है। कालिदास के शब्दो में - "मैं अनुभव करता हूँ कि यह ग्राम-प्रान्तर मेरी वास्तविक भूमि है। मैं कई सूत्रों से इस भूमि से जुड़ा हूँ। उन सूत्रों में तुम हो, यह आकाश और ये मेघ हैं, यहाँ को हरियाली है, हरिणों के बच्चे हैं, पशुपाल हैं।"[40]

उपर्युक्त गद्यांश में कालिदास अपनी यह भावना स्पष्ट करता है कि अगर वह उज्जयिनी चला जायेगा तो वह अपनी भूमि से उखड जायेगा। इस प्रसंग में कालिदास के व्यक्तित्व की टूटने की सम्भावना को नाटककार ने संकेतित किया है और हम देखते हैं कि उज्जयिनी और तत्पश्चात कश्मीर जाने पर कालिदास का व्यक्तित्व खंडित हुआ है, वह टुटा हुआ एक साधारण आदमी-सा बन गया है।

मनुष्य सौंदर्यपिपासु प्राणी है, लेकिन कोई भी कवि या साहित्याकार साधारण व्यक्ति की अपेक्षा अधिक तीव्र पिपासु होता है क्योंकि वह ही सौंदर्य से अभिभूत होकर काव्य या साहित्य की रचना करता है। नाटककार ने प्रियगुंमंजरी के माध्यम से यह दर्शाया है कि कालिदास के साहित्य का प्रेरणास्त्रोत नारी-सौंदर्य भी है और प्राकृतिक सौंदर्य भी है।

मल्लिका का सौंदर्य लाजवाब है और उसके ग्रामप्रान्तर का प्राकृतिक सौंदर्य भी उतना ही उल्लेखनीय है जितना मल्लिका का सौंदर्य। प्रियंगुमंजरी के शब्दों में - "इस सौन्दर्य के सामने जीवन की सब सुविधाएँ हेय हैं। इसे आँखों में व्याप्त करने के लिए जीवन भर का समय भी पर्याप्त नहीं।"[41]

प्रस्तुत नाटक में प्राकृतिक सौंदर्य को भी महत्व दिया गया है। कालिदास की प्रेयसी मल्लिका जिस भूप्रदेश में रहती है वह प्रदेश प्राकृतिक सौंदर्य का खजाना है। वहाँ की पर्वत की शृंखलाएँ अतीव सुंदर हैं। यहाँ से बहुत दूर तक की पर्वत-श्रृंखलाएँ दिखायी देती हैं····कितनी निर्व्याज सुन्दरता है। मुझे यहाँ आकर तुमसे स्पर्द्धा हो रही है।"[42]

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि कालिदास की साहित्य-साधना में नारी सौंदर्य और प्राकृतिक-सौंदर्य का मणिकांचन योग है।

मेघदूत का प्रेरणास्त्रोत: मल्लिका का अतीव सौंदर्य

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक के दूसरे अंक में कालिदास की एक महत्वपूर्ण काव्यरचना "मेघदूत" का उल्लेख किया गया है। इस मेघदूत की रचना कालिदास ने उज्जयिनी जाकर की है। जब कालिदास ने उज्जयिनी जाकर "मेघदूत" की रचना की उस समय उसने अपनी धर्मपत्नी राजदुहिता प्रियंगुमंजरी को यह भी बता दिया है कि इस काव्य का प्रेरणास्त्रोत उसकी प्रेयसी मल्लिका और उसका घर तथा वहाँ का वातावरण है। इस वातावरण को देखने के लिए प्रियंगुमंजरी मल्लिका के यहाँ आ जाती है। प्रियंगुमंजरी के मुँह से कालिदास ने यह संकेत दिया है कि मल्लिका और उसका घर "मेघदूत" का प्रेरणास्त्रोत है। प्रियंगुमंजरी के शब्दों में - "नहीं, बैठना नहीं चाहती। तुम्हें और तुम्हारे घर को देखना चाहती हूँ। उन्होंने बहुत बार इस घर की और तुम्हारी चर्चा की है। जिन दिनों "मेघदूत" लिख रहे थे उन दिनों प्रायः यहाँ का स्मरण किया करते थे।[43]

आज इस भूमि का आकर्षण ही हमें यहाँ ले आया है। अन्यथा दूसरे मार्ग से जाने में हमें अधिक सुविधा थी।

'ऋतुसंहार' का महत्व

प्रस्तुत नाटक में यह दिखाया गया है कि कालिदास के "ऋतुसंहार" पढ़ने से सम्राट विक्रमादित्य प्रभावित हुए। उन्होंने आचार्य वररुचि तथा अन्य राजपुरुष कालिदास के गाँव इसलिए भेजे हैं कि कालिदास ने जिस कविता को जन्म दिया उसकी जन्मभूमि क्या है ? कहने का आशय है कि कालिदास एक साधारण कवि न रहकर एक प्रतिष्ठित कवि के रूप में है और उसकी प्रतिभा को देखकर अचरज में डुबे गये हैं। साथ ही साथ यह भी दर्शाया गया है कि कालिदास की कविता की जन्मभूमि भी महान होगी। यहाँ नाटककार ने कालिदास के काव्य की तथा उसके जन्मभूमि की प्रशंसा की है और ऐतिहासिक सत्य को उद्घाटित किया है। यद्यपि कालिदास की जन्मभूमि के बारे में विद्वानों में मतभेद हैं लेकिन इस बात में कोई भेद नहीं हो सकता कि कालिदास ने जिस कविता को जन्म दिया है उसक कविता का प्रदेश सबके लिए आदरणीय बन गया है।

यद्यपि नाटक में कालिदास के गाँव के नाम के बारे में कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं हैं फिर भी कालिदास "मालवा" का निवासी माना जाता है। यह मालव-प्रदेश, प्राकृतिक, सौंदर्य से परिपूर्ण है और "ऋतुसंहार" में जो विभिन्न ऋतुओं का वर्णन किया गया है, वह कवि की जन्मभूमि का ही परिचायक है।

कालिदास विरचित "ऋतुसंहार" का इसलिए महत्व है कि उज्जयिनी के सम्राट विक्रमादित्य ने आचार्य वररुचि और दरबार के कुछ कर्मचारियों को कालिदास के गाँव भेजा है। इतना ही नहीं आचार्य वररुचि सम्राट का निमंत्रण देने के लिए गाँव आते हैं, ओर कालिदास की इच्छा न होते हुए भी अपनी प्रेयसी मल्लिका के आग्रह पर उज्जयिनी जाता है और उसका राजधानी में राजकीय मान-सम्मान होता है। यह मान-सम्मान दिलाने वाला "ऋतुसंहार" काव्यग्रंथ ही है। यह कवि का प्रथम काव्य ग्रंथ है। अतः "ऋतुसंहार" का महत्व निर्विवाद है।

आत्माभिव्यक्ति - भोगा हुआ यथार्थ

नाटककार मोहन राकेश ने यह दर्शाया है कि कालिदास के काव्यग्रन्थों की प्रेरणा उसकी प्रेयसी मल्लिका है। यद्यपि उज्जयिनी और आस-पास के लोगों

को ऐसा लगता है कि उज्जयिनी के जीवन और वातावरण में रहकर कालिदास ने बहुत कुछ लिखा है लेकिन कालिदास स्वयं मल्लिका से कहता है कि उसके काव्य का प्रेरणास्त्रोत उसकी ग्राम-प्रान्तर भूमि तथा मल्लिका ही है।

नाटककार ने "कुमार संभव", "मेघदूत", "शाकुन्तल" और "रघुवंश" कलाकृतियों का उल्लेख अपने नाटक में किया है और कालिदास के आत्मनिवदेन में यह सब बातें प्रकट हुई हैं। कालिदास के ग्राम-प्रान्तर के जीवन का संचय है, उसके हाथ से लिखी गई कलाकृतियाँ कालिदास के अनुसार "कुमारसम्भव" की पृष्ठभूमिक जो उसने लिखी है वह वास्तव में हिमालय का वर्णन है। "कुमारसम्भव" में जिस उमा नारी पात्र का चित्रण किया गया है वह नारी मल्लिका है। "मेघदूत" में विप्रलम्भ श्रृंगार का वर्णन किया गया है।

"मेघदूत" काव्य में यक्ष और यक्षिणी की विरह-वेदना से व्यथित हैं। कालिदास के "मेघदूत" के यक्ष की पीड़ा वास्तव में कालिदास की पीडा है। उस काव्य में चित्रित विरह से व्याकुल हुई यक्षिणी मल्लिका है। उसने यद्यपि उज्जयिनी का और वहाँ के वातावरण का जो वर्णन किया है वह काल्पनिक है। उस काव्यग्रंथ में मल्लिका को उज्जयिनी में देखने की कल्पना कालिदास के काव्य की प्रतिभा का द्योतक है।

नाटककार "शाकुन्तल" नाटक के बारे में कालिदास के मुँह से यह सूचित किया है कि "अभिज्ञान शाकुन्तल" नाटक में शकुन्तला का जो चित्रण किया गया है उस समय कालिदास के मन में प्रेयसी मल्लिका का रूप अंकित हुआ था।

"रघुवंश" काव्यग्रंथ में "अज" नामक पात्र का जो विलाप दिखाई पडता है वह वास्तव में कालिदास की ही वेदना की अभिव्यक्ति है।

इसमें संदेह नहीं कि कालिदास के साहित्य में वास्तव में भोगा हुआ यथार्थ और प्रेयसी मल्लिका का चरित्र विभिन्न रूप-रेखाओं से अंकित किया गया है। कालिदास के समुचय साहित्य में स्वयं कालिदास और उनका जीवन तथा प्रेयसी

मल्लिका का जीवन भी अभिव्यक्त हुआ है। इससे हटकर साहित्य का सृजन करने में कालिदास असफल रहा है। कालिदास के शब्दों में - "मैंने जब-जब लिखने का प्रयास किया तुम्हारे अपने जीवन के इतिहास को फिर फिर दोहराया। और जब उससे हटकर लिखना चाहता तो रचना प्राणवान नहीं हुई। "रघुवंश" में अज का विलाप मेरी ही वेदना की अभिव्यक्ति है।"[44]

सफल कवि और नाटककार

नाटककार मोहन राकेश ने "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में कालिदास के साहित्यिक योगदान पर भी अल्पमात्रा में भी क्यों न हो, प्रकाश डाला है।

कालिदास की प्रथम रचना "ऋतुसंहार" उज्जयिनी के सम्राट विक्रमादित्य और दरबार के अन्य लोगों द्वारा पढी गई है। जिसकी वजह से कालिदास को राजकीय सम्मान से विभूषित किया गया है।

'ऋतुसंहार' के अतिरिक्त अन्य ग्रंथो की रचना कालिदास ने उज्जयिनी जाकर की है। उज्जयिनी और आस-पास के लोगों ने कालिदास के ग्रंथ अवश्य पढे हैं। उज्जयिनी से आने वाले व्यापरियों से मल्लिका ने भी "कुमारसम्भव", "मेघदूत" तथा अन्य ग्रन्थ खरीदकर पढ़े हैं और कालिदास की साहित्य-साधना के प्रति अपना सद्भाव प्रकट किया है।

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक के निक्षेप नामक एक पात्र कथन द्वारा नाटककार ने यह उल्लेख किया है कि कालिदास ने कुछ नाटकों की रचना की और ये नाटक उज्जयिनी में रंगमंच पर खेले गये हैं।[45]

उपर्युक्त विवेचन से कालिदास के व्यक्तित्व पर प्रकश पडता है। कालिदास उज्जयिनी जाकर कुछ काव्यग्रंथों की और नाट्यों की रचना कर चुकी है और उनकी प्रशंसा उज्जयिनी और आसपास के प्रदशों पर रही है। एक सफल कवि और नाटककार के रूप में कालिदास का व्यक्तित्व निर्विवाद है।

कालिदास के साहित्य पर अनुसंधान

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक में यह दर्शाया गया है कि कालिदास ख्यातिप्राप्त कवि और नाटककार हैं। उनके साहित्य का अनुशीलन उज्जयिनी में चल रहा है। कालिदास के साहित्य में प्रयुक्त कुछ शब्दों की छान-बीन करने के लिए शोध-छात्रा के रूप में रंगिणी और संगिनी कालिदास की मातृभूमि में प्रवेश करती हैं और जहाँ कालिदास की प्रेयसी मल्लिका से चर्चा करते हैं वहाँ वे आ जाती हैं और मल्लिका से चर्चा करते हुए कुछ शब्दों की छान-बीन करती हैं। जिनमें प्रमुख शब्द हैं - प्रकोष्ठ, कुंभ, वनस्पति, औषधियाँ आदि शब्दों का उल्लेख किया गया है। एक जगह संगिणी मल्लिका से स्वयं कहती है कि जिस प्रदेश ने कालिदास को असाधारण प्रतिभा दी है वहाँ की प्रत्येक वस्तु असाधारण होनी चाहिए।

इतना ही नहीं दूसरी शोध-छात्रा रंगिणी यह कहती है कि राजकीय नियोजन से हम दोनों {रंगिणी और संगिनी} कालिदास के जीवन की पृष्ठभूमि का अध्ययन कर रही हैं। उनकी दृष्टि में यह बड़ा और महत्वपूर्ण कार्य है। लेकिन हताश होकर रंगिणी यह भी कहती है कि इस प्रदेश में घूमकर हम तो लगभग निराश हो चुकी हैं, यहाँ कुछ सामग्री है ही नहीं।

इस विवेचन से यह स्पष्ट है कि कालिदास की साहित्य-साधना और उसकी प्रतिभा पर लोग सोच रहे हैं, चर्चा कर रहे हैं। शोध-छात्रा के रूप में रंगिणी और संगिनी का नाटक मे किया गया उल्लेख [46] विशेष महत्वपूर्ण है। किसी महान लेखक के महान पृष्ठभूमि पर शोध-कार्य करना एक महत्वपूर्ण बात है और इस बात को दर्शाने के लिए नाटककार ने रंगिनी और संगिनी का शोध-छात्रा के रूप में इस्तेमाल किया है।

इसमें संदेह नहीं कि कालिदास और उसके साहित्य पर काफी शोध-कार्य हुआ है। कुछ प्रमुख शोध-ग्रंथ इसप्रकार हैं -

1· कालिदास - चन्द्रबली पांडे

2· विश्वकवि कालिदास - एक अध्ययन - डॉ· सूर्यनारायण व्यास

3· कालिदास की लालित्य योजना - आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

4· कालिदास और उनका युग - डॉ·भगवतशरण उपाध्याय

5· मेघदूत - एक अध्ययन - डॉ·वासुदेव शरण अग्रवाल

6· महाकवि कालिदास - डा·रमाशंकर तिवारी

7· Kalidas - Arbiudo

8. Classical Sanskrit Literature - Dr.A.B.Keith

9. The Sanskrit Drama - Dr.A.B.Keith

व्यक्तित्व के अन्य पहलू

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक के कालिदास के व्यक्तित्व के कुछ और पहलू नाटककार मोहन राकेश ने रेखांकित किए हैं, जो इसप्रकार हैं -

कोमल कवि : कालिदास

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक में नाटककार मोहन राकेश ने कालिदास के प्रकृति प्रेम और कोमल हृदय को एक साथ चित्रित किया है। अपने ग्राम-प्रान्तर में भ्रमण करने वाला और एक आहत हरिणशावक को लेकर मल्लिका के घर के ड्योढी पर बैठने वाले और हरिणशावक की सेवा करने वाले कालिदास को नाटककार ने बड़े ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। हरिणशावक के शरीर से लहु टपकता रहता है यह देखकर कालिदास अपने मन में जरूर व्यथित होता है, लेकिन बाहर से उसकी सांत्वन करते नजर आता है। यद्यपि हरिणशावक एक बाण से जख्मी होता है, फिर भी उसमें जीने की लालसा कालिदास भर देता है। एक बाण हरिणशावक के प्राण ले सकता है तो उँगलियों का कोमल स्पर्श जान दे भी सकता है। उसके अंग पर घृत का लेप लगाने की, फिर से वनस्थली में घूमने की तथा "कोमल" दुर्वा खाने की चेतना उसमे निर्माण करता है। कालिदास के आदेश पर मल्लिका दूध लाती है और हरिणशावक को पिलाती है। कालिदास उस हरिणशावक से यह भी कहता है कि वह उसे ऐसी जगह ले जाना चाहता है जहाँ उसकी

माँ की-सी आँखे और उसका-सा ही स्नेह उसे मिल जायेगा और यही ठिकाना है मल्लिका का प्रकोष्ठ।[47]

ग्राम-प्रान्तर में आये किसी व्यक्ति {दंतुल} ने ही हरिणशावक को आहत किया होगा ऐसा अनुमान लगाया जाता है।

इसमें संदेह नहीं कि इस प्रसंग में नाटककार ने युवा कालिदास को कोमलता का परिचय हरिणशावक के उपचार क्रिया-कलाप से दिया है। ग्रामीण जीवन का यह एक अनुठा लुभावना सजीव चित्र है और कालिदास के व्यक्तिरेखा का एक अविभाज्य अंग।

मित्रता पर भरोसा ?

विलोम इस नाटक का खलनायक है और वह जानबूझकर मल्लिका से कहता है कि पर्वत-शिखर की ओर से एक अश्वारोही को मैं आते देख रहा हूँ, और मुझे ऐसा लगता है कि कुछ समय के लिए कालिदास यहाँ आ जायेगा और मैं उससे कुशल क्षेत्र पुछूँगा क्योंकि मेरी उससे बहुत पुरानी मित्रता है लेकिन कालिदास मल्लिका के यहाँ नहीं आता है। मल्लिका से न मिलते हुए ही वह सपरिवार कश्मीर चला जाता है।

कालिदास के उज्जयिनी ग्राम-प्रान्तर आने पर वह मल्लिका से तथा विलोम से मिलकर जायेगा इसप्रकार का भरोसा व्यक्त करता है। वह कहता है कालिदास हम से न मिलने पर उज्जयिनी वापस लौटा इस बात का उसे खेद है। वह कहता है अनेक वर्ष बीतने पर अब कालिदास की मुलाकात हो जायेगी लेकिन नहीं हुई। अतः वह कहता है अपनी मित्रता पर जो भरोसा था वह भरोसा नहीं रहा है। इसका कारण भी विलोम बताता है, समान की समान से मित्रता होती है।[48] अर्थात यह स्पष्ट है कि कालिदास और विलोम में असमानता ही अधिक है। इसलिए उनकी मित्रता के होने में सम्भावना नहीं है।

कालिदास और वारांगणा

कालिदास के उज्जयिनी जाने पर वहाँ यह अपवाद बताया जाता है कि कालिदास का बहुत-सा समय वारांगणाओं के साहचर्य में व्यतीत होता है। इस अपवाद को सुनकर मल्लिका भी अपने प्रकोष्ठ में चिंतातुर दशा में स्वयं कहती है कि कालिदास के अभाव में और आर्थिक दुर्दशा में वह भी वारांगणा बन चुकी है।[49]

टूटा हारा हुआ कालिदास

जिस प्रकार प्रकृति में परिवर्तन होता रहता है उस प्रकार प्रकृति का जो अनूठा उपहार मानव है, उसमें भी प्रसंगवश परिवर्तन होता रहता है। कालिदास के उज्जयिनी और वहाँ से कश्मीर जाने से जिस प्रकार उसमें परिवर्तन हुआ है उसप्रकार मल्लिका में भी परिवर्तन हुआ है। दोनों भी एक दूसरे से प्यार करते हुए भी एक-दूसरे से अलग हो गये हैं। दोनों ही टुटे हुए नजर आते हैं। दोनों में परिवर्तन हो गया है। मल्लिका कालिदास से पूछती है - "आश्चर्य ?···मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा कि तुम तुम हो, और मैं जो तुम्हें देख रही हूँ, वास्तव में मैं मैं ही हूँ।[50]

स्वयं कालिदास भी उसमें हुए परिवर्तन को स्वीकार करता है और मल्लिका से कहता है कि - "नहीं स्वप्न नहीं है। यथार्थ है कि मैं यहाँ हूँ। दिनों की यात्रा करके थका, टूटा-हारा हुआ यहाँ आया हूँ कि एक बार यहाँ के यथार्थ को देख लूँ।[51] यह स्पष्ट ही है कि मोहन राकेश द्वारा चित्रित कालिदास टूटा-हारा कालिदास है।

मातृगुप्त से पुनः कालिदास

नाटक के तीसरे अंक में नाटककार ने कालिदास के मुँह से यह बताया है कि कालिदास का उज्जयिनी जाना और फिर क़श्मीर जाना दोनों ही बाते ऐसी हैं जो कालिदास के मोहग्रस्त मल्लिका के सम्मुख स्वयं कहता है कि सत्ता और प्रभुता का मोह अब छूट गया है । इतना ही नहीं वह अब यह भी कहता है कि उसने कश्मीर जाकर संन्यास नहीं लिया है अंतर केवल इतना ही है कि कालिदास

मातृगुप्त की कलेवर से मुक्त होकर कालिदास के कलेवर में जी सके। कालिदास के शब्दों में - "सत्ता और प्रभुता का मोह छूट गया है आज मैं उस सबसे युक्त हूँ, जो वर्षों से मुझे कसता रहा है। कश्मीर में लोग समझते हैं कि मैंने संन्यास ले लिया है परन्तु मैंने संन्यास नहीं लिया। मैं केवल मातृगुप्त के कलेवर से मुक्त हुआ हूँ जिससे पुनः कालिदास के कलेवर में जी सकूं।"[52] लेकिन कर्तव्यदक्ष की यह कामना पूरी नहीं होती।

कालिदास की स्मरण शक्ति

कालिदास की व्यक्तित्व की एक विशेषता है उसकी स्मरणशक्ति। कालिदास के वापस लौटने पर और मल्लिका से मिलने पर वह स्पष्ट रूप से कहता है कि अपनी मातृभूमि और मल्लिका और उसके घर के प्रति भी उसके मन में आत्मीयता रही है। उज्जयिनी और कश्मीर जाने पर उसे समाधान नही मिला जो पहले उसे मिलता था। इसलिए कालिदास अपने स्मरण शक्ति का उल्लेख करता है। वह मल्लिका से कहता है कि उसे यहाँ की एक-एक वस्तू का रूप और आकार का स्मरण है। कुम्भ, वाद्य-छाल, कुशा, दीपक, गेरू की आकृतियाँ और मल्लिका की आँखे, मल्लिका की आँखों के स्मरण में कालिदास कहता है - "जाने के दिन तुम्हारी आँखों का जो रूप देखा था, वह आज तक मेरी स्मृति में अंकित है।[53]

आत्मविश्वास का अभाव

कालिदास अपनी मातृभूमि छोडकर अन्यत्र नहीं जाना चाहता था। "आषाढ़ का एक दिन" नाटक के तीसरे अंक में जब कालिदास उज्जयिनी और कश्मीर से वापस मल्लिका के यहाँ आ जाता है कि उसका खुद पर विश्वास और भर्त्सना से जीवन बिताने पर प्रतिष्ठा और सम्मान के वातावरण में जाकर वह कैसा अनुभव करेगा। कालिदास आगे यह भी कहता है कि उसके मन में यह आशंका थी कि वह उज्जयिनी के राजनीतिक वातावरण में जाकर वह वातावरण ही उसे छा लेगा और उसके जीवन की दिशा बदल जायेगी। यह स्पष्ट है कि कालिदास की यह आशंका सच बन गयी और कालिदास के जीवन में काफी परिवर्तन हुआ।[54]

परिस्थिति का दास

मनुष्य सामान्यतया परिस्थितियों का दास है। वह मोहग्रस्त बनकर या अन्य कारणवश एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में गुजरने का प्रयास करता रहता है। कालिदास भी अभावग्रस्तता से हटकर प्रतिष्ठासंपन्न व्यक्ति बनकर सुखी होना चाहता था। उसे ऐसा लगता है कि वह आज नहीं तो कल परिस्थितियों पर वश पा लेगा और राजनीतिक और साहित्यिक दोनों क्षेत्रों में अपने को बाँट लेगा। लेकिन प्रत्यक्षतया ऐसा नहीं हो सकेगा। कालिदास स्वयं ही परिस्थितियों के हाथों बनता और प्रेरित होता रहा। आज नहीं तो कल वह परिस्थितियों पर विजय पा लेगा और खुद का एक अलग स्थान निर्माण करेगा ·ऐसी उसकी जो धारणा था वह अंत में गलत साबित हो गयी और इसीकारण सुख और प्रतिष्ठा से कालिदास टूट जाता है। वह परिस्थितियों को मानो दास ही बनता जाता है। उसकी कल की प्रतीक्षा निष्प्रभ हो जाती है और वह टूटा हारा हुआ बन जाता है। उसका व्यक्तित्व खंडित होता है। कालिदास के शब्दों में - "जिस कल की मुझे प्रतीक्षा थी, वह कल कभी नहीं आया और मैं धीरे-धीरे खण्डित होता गया ,होता गया और एक दिन···एक दिन मैंने पाया कि मैं सर्वथा टूट गया हूँ। मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसका उस विशाल के साथ कुछ भी संबंध था।[55]

यहाँ नाटककार मोहन राकेश ने महाकवि कालिदास के चरित्र सृष्टि में यह दर्शाने की कोशिश की है कि बड़ा-सा महाकवि भी अभावग्रस्त होता है, दुःखी होता है। समय का दास बन जाता है। यहाँ नाटककार ने एक महान कवि को एक साधारण व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है, जिस प्रकार कोई साधारण व्यक्ति अपने मन में सुख और प्रतिष्ठा की इच्छा करताहै और अपने मूल कार्यक्षेत्र से बाहर प्रवेश करता है और उसमें असफल बन जाता है। यह असफलता ही साधारण मानव की कमजोरी मानी जाती है। महाकवि कालिदास के बारे में यह स्थिति दिखाकर उसके व्यक्तित्व को विभाजित कर नाटक में आधुनिक कालिदास की चरित्र सृष्टि को ही स्थान दिया है।

नाटक में दर्शायी गई यह स्थिति किसी साधारण व्यक्ति की ही हो सकती है। कालिदास के व्यक्तित्व को खंडित दिखाकर कालिदास के मिथक को ही नाटककार ने तोड़-मरोड़कर एक नये कालिदास की ही सृष्टि निर्माण की है। यह नया कालिदास नये वर्तमान युग के नाटककार की नयी अभिव्यक्ति है। ऐतिहासिक कालिदास को आधुनिक कालिदास के रूप में चित्रित करना नाटककार की नयी परिकल्पना है। लगता है नाटककार मोहन राकेश को भोगा हुआ यथार्थ इस चरित्र-चित्रण में प्रतिबिंबित हुआ है।

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक में चित्रित वह आत्मनिवेदन सर्वथा नया है। नाटककार ने नाटक में प्रयुक्त कालिदास के चरित्र-चित्रण में आत्मनिवेदन का जो प्रयोग किया है वह सर्वथा ऐतिहासिक कालिदास से भिन्न है। यह नाटककार मोहन राकेश की नाट्यकला की नयी उपलब्धि है।

<u>पश्चाताप-दग्ध कालिदास</u>

नाटक के तीसरे अंक में नाटककार ने यह दर्शाया है कि कालिदास उज्जयिनी और कश्मीर से लौटकर मल्लिका के घर आया है और अत्यंत दुःखी होकर अपनी व्यथा प्रकट करते हुए कहता है कि उसे तुरन्त लौट आना चाहिए या वह पश्चाताप से जल गया है और मल्लिका सम्मुख कबुल करता है कि उज्जयिनी और कश्मीर के राजनीतिक वातावरण मे वह कुछ नहीं लिख पाया है। अपने गाँव की प्रकृति और प्रेयसी मल्लिका जैसा वातावरण वहाँ कालिदास को नहीं मिला। इसलिए कालिदास यह भी कहता है कि अनेक वर्षो से उसके हृदय में जो कुछ घुमड़ रहा है उसे वो वहाँ अभिव्यक्त नही कर पाया। उसका पश्चाताप निम्नलिखित शब्दों में इसप्रकार है - "जो अभाव वर्षो से मुझे सालते रहे हैं, वे आज और बडे, प्रतीत होते हैं, मल्लिका। मुझे वर्षा से पहले यहाँ लौट आना चाहिए था ताकि यहाँ वर्षा में भीगता भीगकर लिखता - वह सब जो मैं अब तक नहीं लिख पाया और जो आषाढ़ के मेघों की तरह वर्षा से मेरे अन्दर घुमड़ रहा है। परन्तु बरस नहीं पाता, क्योंकि उसे ऋतु नहीं मिलती। वायु नहीं मिलती। ....यह कौन-सी रचना है ? ये

तो केवल कोरे पृष्ठ हैं।"[56]

कालिदास का पलायन

नाटक के अंत में नाटककार ने यह दर्शाया है कि कश्मीर से राजसंन्यास लेकर आनेवाला कालिदास अंत में यह समझ जाता है कि उसकी प्रेयसी मल्लिका पहले की भाँति नहीं रही है। वह माता बन गई है। उसके गाँव का उसका दुश्मन विलोम है, वह उस घर में रहता है और उन दोनों में पति-पत्नी जैसा नाता जुट गया है और उसकी निशानी मल्लिका की बच्ची है। कालिदास को यह मालूम पडता है कि इस जगत् में समय अधिक शक्तिशाली है और वह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है।

बच्ची के रोने की आवाज सुनकर मल्लिका अन्दर जाती है और कालिदास उन पृष्ठों को एक बार देखता है और तुरन्त ही चला जाता है।[57] इसप्रकार नाटककार ने कालिदास की जीवन-व्यथा को ही अन्त में चित्रित किया है। जो केवल कालिदास की ही व्यथा नहीं तो सारे साहित्यकारों की व्यथा हो सकती है।

जब मल्लिका बाहर आती है तो उसे कालिदास दिखाई नहीं देता है वह कालिदास को न देखकर दौडती-सी झरोखे के पास आ जाती है और जोर से कालिदास, कालिदास पुकारती है और बच्ची को देखकर जैसे उखड़ जाती है और टुटी-सी आसन पर बैठ जाती है। इस प्रकार कालिदास की प्रेयसी ही दुःख से मर्माहत हुई दिखाई पडती है। नाटक का अंत दुःखमूलक है, करूणाजनक है, जो आज के साधारण आदमी की असाधारण सृष्टि है।

चरित्र-चित्रण विधि

क्या नाटक, क्या एकांकी, क्या उपन्यास, क्या कहानी - इन सब में पात्रों की सृष्टि अनिवार्य होती है। बिना पात्रों के नाटक या उपन्यास का सृजन असंभव है। चाहे ये पात्र मानव भी होते हैं और अपवादभूत रूप में मानवेतर भी हो सकते हैं। या एक साथ दोनों प्रकार की सृष्टि लेखक अपने साहित्य में कर सकता है। पात्रों के चरित्र-चित्रण में उनकी चरित्र-चित्रण की विधियाँ भी महत्वपूर्ण होती हैं जो

लेखक की कारयत्री प्रतिभा का परिचय दे सकती है। हमारे अध्ययन का प्रमुख विषय कालिदास का चरित्र-चित्रण है। इस दृष्टि से मोहन राकेश के "आषाढ़ का एक दिन" नाटक के चरित्र के साथ ही साथ उसकी चरित्र-विधियों पर प्रकाश डालना हमारा कर्तव्य है। कालिदास के चरित्र-चित्रण को परिलक्षित करते हुए नाटककारों ने जिन चरित्र-चित्रण विधियों को प्रस्तुत किया है, वे इसप्रकार हैं।

अन्य पात्रों द्वारा चरित्र-चित्रण

कालिदास के चरित्र-चित्रण पर प्रकाश डालने में नाटक के कुछ पात्र सहायक दिखाई पडते हैं। उनके अपने-अपने दृष्टिकोण नजर आते हैं। कालिदास को देखने की हर एक की दृष्टि भिन्न है। तथापिकुल मिलाकर कालिदास का व्यक्तित्व तथा कृतित्व, कार्यव्यापार की दृष्टि से उनका विचार उल्लेखनीय है।

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक में कालिदास के अतिरिक्त अम्बिका, मल्लिका, प्रियंगुमंजरी, विलोम आदि प्रमुख पात्र हैं। तथा मातुल, दंतुल, निक्षेप आदि गौण पात्र हैं। इन पात्रों के माध्यम से नाटककार ने कालिदास के व्यक्तित्व की कुछ झाँकियाँ प्रस्तुत की हैं।

नाटक के दूसरे अंक में कालिदास रंगमंच पर कहीं भी दिखाई नहीं देता है बल्कि उसके चरित्र की कुछ विशेषताएँ अम्बिका द्वारा सामान्य रूप से नजर आती है।

अम्बिका की दृष्टि में कालिदास

अम्बिका ठोस यथार्थवादी नारी है। कालिदास के प्रति उसका दृष्टिकोण यथार्थवादी और कलुषित है।

﴾क﴿ घृणा-पात्र कालिदास

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक में नाटककार मोहन राकेश ने मल्लिका और अम्बिका के वार्तालाप के माध्यम से मल्लिका के विवाह के बारे में चर्चा की है। उस चर्चा में दो बाते विशेष उल्लेखीनय हैं। एक यह कि मल्लिका कालिदास से भावनात्मक रूप में प्यार करती है लेकिन विवाह का प्रश्न खड़ा होने

पर वह यह भी बताती है कि "मैं विवाह नही करना चाहती हूँ" दूसरी बात यह है कि मल्लिका की माँ अम्बिका, कालिदास को अलग दृष्टि से देखती है। वह मल्लिका से स्पष्ट ही कहती है कि गाँव के अन्य लोगों से वह कालिदास को अच्छी तरह से जानती है। अम्बिका के इस जानने में महत्वपूर्ण बात यह है कि वह कालिदास को एक अच्छा युवक नहीं मानती है बल्कि उसे घृणा करती है। वह यह भी बताती है कि कालिदास के प्रभाव से उसका सारा घर नष्ट हो रहा है। इसप्रकार हम देखते हैं कि जहाँ एक ओर कालिदास मल्लिका का प्रेमी है और मल्लिका उससे प्यार करती है वहाँ दूसरी ओर अम्बिका कालिदास से नफरत करती हुई दिखाई पडती है। आखिर अम्बिका मल्लिका से कहती है - "मैं उससे §कालिदास से§ घृणा करती हूँ।"[58]

§ख§ आत्मसीमित कालिदास

प्रस्तुत नाटक में अम्बिका का कालिदास के प्रति अपना रुख समय-समय पर प्रकट करती है। वह कालिदास को व्यक्तिनिष्ठ तथा आत्मकेंद्रित और आत्मप्रेमी के रूप में देखती है। संसार में अपने सिवा उसके और किसीसे मोह नहीं है।"[59] इससे स्पष्ट है कि अम्बिका की दृष्टि में कालिदास आत्मसीमित है।

§ग§ चालबाज कालिदास

जब कालिदास को राजनीतिक सम्मान, दिया जाता है तब वह उस निमंत्रण का स्वीकार नहीं करता और ऐसा हट करता है कि जब तक उज्जयिनी से आये हुए अतिथी लौट नहीं जाते, वे जगदम्बा के मन्दिर में ही रहेंगे, घर नहीं जायेंगे यह बात निक्षेप अंबिका से कह देता है। अम्बिका इस घटना को विचक्षणा कहती है और कालिदास के प्रति अपना अलग दृष्टिकोण व्यक्त करती है।

अम्बिका निक्षेप से कहती है कि कालिदास का कवि सम्मान के प्रति उदासीन होना और जगदंबा मन्दिर में साधारणतः रहना एक तरह की चाल है। उज्जयिनी के राज्य के प्रतिनिधि मन्दिर में जाकर कवि की अभ्यर्थना करते हैं और कवि धीरे-धीरे आँखे खोलता है। अम्बिका की दृष्टि से यह घटना एक तरह का

नाटक खेलना है, और एक तरह की विचक्षणता है।

§घ§ कर्तव्य-विमूढ़ कालिदास

प्रस्तुत नाटक में अम्बिका ठोस यथार्थ वादी नारी है। उसके मन में मुख्यतया अपनी बेटी मल्लिका की शादी की समस्या खडी रहती है। यद्यपि मल्लिका के अनुसार कालिदास और उसका भावना का संबंध है। फिर भी अम्बिका इस बात को स्वीकार करती हुई सूचित करती है कि सजीव व्यक्ति के लिए यथार्थ के लिए जितनी भावना की आवश्यकता है उतनी विवाह की घर-बार की आवश्यकता है। और ऐसे समय में कर्तव्य की जानकारी दोनों को §मल्लिका और कालिदास§ अपेक्षित है। अम्बिका एक विधवा है। उसकी लड़की मल्लिका सयानी है, और उसकी शादी किसी अच्छे व्यक्ति के साथ हो यही उसकी इच्छा है। अतः अम्बिका उसे साफ कहती है कि सजीव प्राणी के जिए कोरी भावना उपर्युक्त नहीं ठहरती है। उसके लिए भोजन, खाना-पीना, निवास आदि की भी जरूरत है। और इन सबका प्रबंध करना पुरूष का कर्तव्य है। यहाँ अगर कालिदास मल्लिका से प्रेम करता है तो उसका यह भी कर्तव्य है कि वह मल्लिका से शादी करे। शादी करने से उसका गृहस्थी जीवन सुखी हो सकता है अन्यथा नहीं। इस संदर्भ में वह खुद का उदाहरण देती हुई कहती है कि माँ की मृत्यु के बाद मल्लिका का जीवन उद्ध्वस्त होगा। अम्बिका के शब्दों में - "कल तुम्हारी माँ का शरीर नहीं रहेगा और घर में एक एक समय के भोजन की व्यवस्था भी नहीं होगी, तो जो प्रश्न तुम्हारे सामने उपस्थित होगा, उसकी तुम क्या उत्तर दोगी। तुम्हारी भावना उस प्रश्न का समाधान कर देगी ?"[60] अम्बिका की दृष्टि में कालिदास कर्तव्य से भागने वाला व्यक्ति है।

मल्लिका की दृष्टि में कालिदास

§क§ राजसम्मान आवश्यक

कालिदास के राजनीतिक सम्मान के बारे में उसकी प्रेयसी मल्लिका का दृष्टिकोण कालिदास के दृष्टिकोण से भिन्न है। जब निक्षेप मल्लिका से कहता है कि अवसर किसी की प्रतीक्षा नहीं करता और "ऋतुसंहार" नामक जिस काव्य-कृति से सम्राट और वहाँ के साधारण जन प्रभावित हुए उस कलाकृति को भूल जाने की

भी संभावना है। इस संदर्भ में मल्लिका के विचार हैं कि कालिदास को इस सम्मान का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। वह यह भी सोचती है कि कालिदास का होने वाला सम्मान कालिदास के व्यक्तित्व का सम्मान है। वह यह भी सोचती है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व को उसके अधिकार से वंचित नहीं करना चाहिए।

अपने दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर मल्लिका निक्षेप के साथ जगदंबा के मन्दिर में कालिदास का मत-परिवर्तन करने के लिए चली जाती है।

"आषाढ़ का एक दिन" की नायिका मल्लिका है, जो एक ग्रामीण युवती तथा कवि कालिदास की प्रेयसी है। उज्जयिनी के सम्राट कालिदास को राजकीय सम्मान प्रदान करना चाहते है, यह सुनकर उसे बहुत खुशी होती है। लेकिन जब कालिदास उस सम्मान से उदासीन बन जाता है तब मल्लिका दुःखी भी होती है और कालिदास को उज्जयिनी जाने के लिए गाँव के जगदम्बा मन्दिर में प्रवेश करती है जहाँ कालिदास अकेला बैठ रहता है। वह निक्षेप से कहती है कि उन्हें ‡कालिदास को‡ "यह सम्मान उनके व्यक्तित्व का है। उन्हें अपने व्यक्तित्व को उसके अधिकार से वंचित नहीं करना चाहिए। चलिये, मैं आपके साथ जगदम्बा के मन्दिर में चलती हूँ।"[61]

‡ख‡ <u>अपवादग्रस्त कालिदास</u>

नाटककार मोहन राकेश ने "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में मल्लिका के मुँह से व्यक्त किया है कि "कोई उन्नति करता है तो उसके नाम के साथ कई तरह के अपवाद जुड़ने लगते हैं।"[62]

<u>प्रियंगुमंजरी की दृष्टि में कालिदास</u>

<u>अभावग्रस्त कालिदास</u>

यद्यपि कालिदास उज्जयिनी चला गया है और कुछ साहित्य रचना भी कर चुका है फिर भी उसका मन अभावग्रस्त-सा बना रहता है। कालिदास की पत्नी प्रियंगुमंजरी को यह बात खटकती है। वह कुछ अफसोस का एहसास भी करती है और इसी कारण कालिदास के अभाव को दूर करने के लिए कालिदास

के मातृभूमि से कुछ सामग्री भी अपने साथ लेना चाहती है। जिसमें मुख्यतया हरिणशावक तरह-तरह की औषधियाँ यहाँ के घरों के कुछ प्रतिछवियाँ आदि बनाने का विचार भी प्रियंगुमंजरी प्रकट करती है। इतना ही नहीं प्रियंगुमंजरी मातुल और उसके बच्चों को भी उज्जयिनी ले जाना चाहती है। प्रियंगुमंजरी का कथन है, इन चीजों के ले जाने से यहाँ का वातावरण उज्जयिनी जा पहुँचेगा और कालिदास का अभाव भी दूर हो जायेगा।[63] प्रियंगुमंजरी की यह दृष्टि वास्तव में कवि कालिदास के व्यक्तित्व की सही पहचान नहीं है।

विलोम की दृष्टि में कालिदास

बदला हुआ कालिदास

प्रस्तुत नाटक में विलोम और कालिदास के वार्तालाप से यह दर्शाया गया है कि क्या उज्जयिनी जाकर कालिदास बदल सकता है। कल तक ग्राम-प्रान्तर में कालिदास और मल्लिका के सम्बन्ध को लेकर लोगों में चर्चा होती है। अतः इस संबंध पर लोगों का ध्यान केंद्रित करते हुए विलोम कालिदास से प्रश्न करता है कि "तुम अभी तक वहीं व्यक्ति हो न, जो कल तक थे।"[64]

मल्लिका इस बात को अनर्गलता समझती है अरोर विलोम इस बात को सार्थक समझता है। विलोम यहाँ यह भी प्रश्न करता है कि, कालिदास यह स्पष्ट कर दे कि उसे उज्जयिनी अकेले ही जाना है या...।"[65]

विलोम के इस प्रश्न पर मल्लिका कहती है कि विलोम के किसी भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए कालिदास बाध्य नहीं है। कालिदास के विचार इस संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं। कालिदास सोचता है कि कालिदास और मल्लिका का सम्बन्ध उनका व्यक्तिगत प्रश्न है। विलोम या ग्राम प्रान्तर के लोगो से उसका कोई ताल्लुकात नहीं है। विलोम के प्रश्न का उत्तर देते समय कालिदास यह सूचित करता है कि विलोम अनधिकार दूसरों के जीवन में प्रवेश कर रहा है। कालिदास के शब्दों में "मैं तुम्हारी प्रशंसा करने के लिए अवश्य बाध्य हूँ, तुम दूसरों के घर में ही नहीं, उनके जीवन में ही अनधिकार प्रवेश कर जाते हो।"[66] कालिदास बदल गया है,

इस विलोम के विचार से कालिदास असहाय है और इसलिए वह विलोम पर गुस्सा उतारता है।

मातुल की दृष्टि में कालिदास

§क§ **मन-परिवर्तन की आशंका**

मातुल अपने भागिनेय को एक साधारण कवि समझता है। मातुल कहता है कि अगर वह §कालिदास§ सम्मान का स्वीकार नहीं करेगा तो सम्राट रूष्ट भी हो सकते हैं। और साथ ही साथ यह भी सोचता है कि, "जो व्यक्ति कुछ देता है , धन हो या सम्मान हो, वह अपना मन बदल भी सकता है और मन बदल गया तो बदल गया।"[67] हम देखते हैं कि कालिदास उज्जयिनी जाने पर बदल जाता है कुछ मात्रा में मोहग्रसत होता है।

§ख§ **अव्यवहारी कालिदास**

कालिदास के प्रति मातुल का यह दृष्टिकोण है कि कालिदास सामान्य लोक व्यवहार के बारे में भी अज्ञानी है। आहत हरिणशावक को गोदी में लिये घर की ओर चले जाने वाले कालिदास को जब मातलु बताता है कि यह समय इस रूप में घर जाने का नहीं है। उज्जयिनी से एक बहुत बडे आचार्य आये हैं यह सुनकर कालिदास ऐसा लौट पडता है जैसे रास्ते में साँप देख लिया हो।

नाटककार ने यहाँ यह दर्शाने की कोशिश की है कि कोई भी लेखक या कवि अधिक व्यावहरिक नहीं होते । वे अपने ही कार्य मे रत रहते हैं।

दन्तुल की दृष्टि में कालिदास

चौर्यकर्मी कालिदास /

"आषाढ का एक दिन" नाटक में दंतुल और कालिदास के बीच हुए वार्तालाप के द्वारा कालिदास पर लांछन लगाने की बात कही गयी है। कालिदास आहत हरिणशावक को लेकर मल्लिका के घर बैठा है। और उस समय आने वाले दंतुल को देखकर वह उसे अपरिचित कहने लगता है और दंतुल भी उसको अपरिचित

बताता है। इसी बीच दंतुल यह कहता है कि उसके बाण से आहत हरिणशावक कालिदास ने चुराया है। और वह चौर्य कर्म तथा सामुद्रिक में भी सामुद्रिक अभ्यास का भी हस्ती है।[68]

इस समय मल्लिका दंतुल के यह शब्द सुनकर दुःखी होती है, गुस्से मे आती है और दंतुल द्वारा कालिदास पर लगाये गये लांछन का विरोध करती है। वस्तुतः अपनी प्रियतम को गालियाँ देनेवाले दंतुल को वह डाँटती है और अप्रत्यक्षतया प्रियतम के प्रति अपना प्रेम प्रकट करती है। इस नाटक में मल्लिका कालिदास के प्रिय दर्शायी गयी है।

निक्षेप की दृष्टि में कालिदास

(क) कालिदास समय का महत्व जाने

निक्षेप के कथन के द्वारा कालिदास के चरित्र पर विशेष प्रकाश डाला गया है। उज्जयिनी से आये हुए अतिथि जब तक नहीं लौटेंगे तब तक कालिदास का जगदम्बा के मन्दिर में रहना निक्षेप के अनुसार कालिदास की बड़ी भूल है। मानव जीवन में अवसर का भी कुछ मूल्य होता है। अवसर का तिरस्कार करना उचित नहीं है। निक्षेप के अनुसार किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व में दो बातें महत्वपूर्ण हैं -

एक उसकी योग्यता और दूसरी उसकी प्रतिष्ठा। व्यक्तित्व के निर्माण में योग्यता एक चौथाई होती है। और अन्य पूर्ति प्रतिष्ठा द्वारा होती है। अतः कालिदास को उज्जयिनी जाना आवश्यक है।[69] इसतरह का प्रतिपादन निक्षेप करता है। निक्षेप के उक्त कथन से कालिदास की भावुकता और अवसर का महत्व निम्नांकित शब्दों में देखा जा सकता है। निक्षेप के शब्दों में -"अवसर किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। कालिदास यहाँ से नहीं जाते हैं तो राज्य की कोई हानि नहीं होगी। राजकवि का आसन रिक्त नहीं रहेगा। परन्तु कालिदास जो आज है, जीवन-भर वही रहेंगे। एक स्थानिक कवि, जो लोग आज "ऋतुंस घर" की प्रशंसा कर रहे हैं, वे भी कुछ दिनों में उन्हें भूल जाएँगे।[70]

(ख) हठवादी कालिदास

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक के पहले अंक में भी कालिदास के चरित्र-चित्रण पर अप्रत्यक्ष प्रकाश डाला गया है। कालिदास को राजसम्मान का निमंत्रन देने के लिए आ. वररुचि आते हैं तब कालिदास उनसे मिलना नहीं चाहते हैं और जब तक उज्जयिनी से आये हुए आचार्य वररुचि इत्यादि अतिथि लौट नहीं जाते तब तक कालिदास जगदंबा के मन्दिर में ही रहेंगे, घर नहीं जायेंगे। निक्षेप के इस विचार से यह स्पष्ट होता है कि, कालिदास हठवादी हैं तथा राजकीय सम्मान के प्रति उदासीन दिखाई देते हैं।

(ग) परिवर्तनशील कालिदास

नाटक के दूसरे अंक में यह दर्शाया गया है कि कालिदास अपना गाँव छोडकर उज्जयिनी चला गया है। कुछ वर्ष बीत चुके हैं लेकिन अपने गाँव वापस नहीं लौटा है। निक्षेप और मल्लिका के बीच हुए वार्तालाप से इतना स्पष्ट होता है कि कालिदास बहुत वर्षों से अपने गाँव वापस नहीं लौटा है। निक्षेप का यह कथन है कि उज्जयिनी जाकर वे वहाँ के ही हो गये हैं।

आत्मनिवेदन शैली

कभी-कभी पात्र स्वयं अपना परिचय या अपने व्यक्तित्व के बारे में कुछ कह देता है उसे सामान्यतया आत्मकथन या आत्मनिवेदन शैली कहा जाता है। "आषाढ़ का एक दिन" नाटक के तीसरे अंक में कालिदास के विविध चारित्रिक विशेषताओं का परिचय कालिदास ने आत्मनिवेदन शैली में दिया है।

जिस प्रकार किसी न्यायालय में कोई वकील अपने पक्ष में अपनी दलील प्रस्तुत करता है उसी प्रकार नाटक के तीसरे अंक में कालिदास एक लम्बी कैफियत मल्लिका के सामने प्रस्तुत करता है। इस लंबे आत्मालाप में कालिदास के टूटे हुए हारे हुए, थके हुए, व्यक्तित्व का सहज ही परिचय मिल जाता है। कालिदास अपने अभावग्रस्त जीवन को अपनी भर्त्सना का विषय मानता है और टूट जाता है। आत्म-निवेदन शैली का निम्नांकित उदाहरण दृष्टव्य है -

"मैं यहाँ से क्यों नहीं जाना चाहता था ? एक कारण यह भी कि मुझे अपने पर विश्वास नहीं था। मैं नही जानता था कि अभाव और भर्त्सना का जीवन व्यतीत करने के बाद प्रतिष्ठा और सम्मान के वातावरण में जाकर मैं कैसा अनुभव करूँगा। मन में कहीं यह आशंका थी कि वह वातावरण मुझे छा लेगा। और मेरे जीवन की दिशा बदल देगा···और यह आशंका निराधार नहीं थी।"[71] नाटक के तीसरे अंक मे कालिदास की कैफियत पूरी तरह से आत्मनिवेदन शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। कालिदास की मनोव्यथा इसमें स्पष्टतया नजर आती है।

संवाद में संवाद

नाटक का एक प्राणतत्व कथोपकथन है। नाटक में जो पात्र होते हैं, उनमे जो संवाद होते हैं, उन संवादों को कथोपकथन कहा जाता है। कथोपकथन की एक विशेषता यह होती है कि एक पात्र दुसरे पात्रों का परिचय देता है। मोहन राकेश के "आषाढ़ का एक दिन" नाटक के कालिदास पात्र के चरित्र-चित्रण पर कथोपकथन में कथोपकथन द्वारा प्रकाश डाला गया है। कालिदास संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ कवि और नाटककार हैं। जब मातुल कालिदास को बताता है कि आचार्य वररूचि उसको अपने साथ उज्जयिनी ले जाने के लिए आये हैं और राज्य की ओर से उसका सम्मान होने वाला है, तब कालिदास अपना स्वाभिमान प्रकट करता है और मातुल से कहता है - "मैं राजकीय मुद्राओं से क्रीत होने के लिए नहीं हूँ।"[72]

कालिदास का यह कथन मातुल और अम्बिका के बीच हुए वार्तालाप मे मातुल अम्बिका को बता देता है। इसमें संदेह नहीं कि कथोपकथन में कथोपकथन की यह शैली कालिदास के स्वाभिमानी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने वाली शैली है।

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक में संवाद में संवाद का में संवाद का सार्थक प्रयोग किया गया है जो कालिदास के चरित्र-चित्रण पर प्रकाश डालने में सहायक हुआ है। मातुल और निक्षेप के बीच हुए वार्तालप में कालिदास के मूल

विचार निम्नलिखित संवाद से प्रस्तुत किये गये। "मैं राजकीय मुद्राओं से क्रीत होने के लिए नहीं हूँ।"

संवाद में संवाद रचना तंत्र में कालिदास के अभिनय को भी अप्रत्यक्षतया अभिनित किया गया है। उपर्युक्त वाक्य कहने के उपरान्त कालिदास कैसे चला गया इसका भी उललेख वार्तालाप में किया गया है। उदा·"ऐसे कहा जैसे राजकीय मुद्राएँ आप के विरह में घुली जाती हो और चल दिये।"[73]

खण्डित संवाद

कभी-कभी नाटककार संवादों की ऐसी रचना करता है कि एक पात्र का संवाद पूरा होने के पहले ही अपने विचार प्रस्तुत करता है। इस दृष्टि से नाटक के अंत में कालिदास की त्रासदी को खण्डित संवादों के माध्यमों से चित्रित किया है। निम्नलिखित गद्यांश देखिए -

मल्लिका : तुम कह रहे थे कि तुम फिर अथ से आरम्भ करना चाहते हो।

कालिदास : मैंने कहा था मैं अथ से आरम्भ करना चाहता हूँ। यह सम्भवतः इच्छा का समय के साथ द्वन्द था। परन्तु देख रहा हूँ कि समय अधिक शक्तिशाली है क्योंकि·····।

मलिक्का : क्योंकि ?

कालिदास : क्योंकि वह प्रतीक्षा नहीं करता।

वस्तुतः खण्डित संवादों की यह योजना खण्डित व्यक्तित्व को प्रकट करने के लिए ही अपनायी है, जो पाठकों या दर्शकों पर उचित प्रभाव डाल सकती है।

खण्डित व्यक्तित्व अंकन

मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में पात्रों के व्यक्तित्व का विघटन एक महत्वपूर्ण बात है। "आषाढ का एक दिन" नाटक में नाटक के प्रथम अंक के अंत में नाटककार ने इस बात का संकेत किया है कि अगर कालिदास अपनी मातृभूमि और प्रेयसी को छोड़कर उज्जयिनी चला जायेगा तो वह अपनी मातृभूमि से उखड जायेगा।

"यहाँ से जाकर मैं अपनी भूमि से उखड जाऊँगा।"[75]

कालिदास के इन मर्मभेदी शब्दों में उसके व्यक्तित्व के विभाजित होने की आशंका मिलती है। कालिदास के खण्डित व्यक्तित्व का संकेत मिलता है। आधुनिक चरित्र-चित्रण शैली का मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में होने वाला एक मार्मिक उद्घाटन ही है।

जहाँ मल्लिका कालिदास से यह कहती है कि "यहाँ की भूमि से नयी भूमि अधिक सम्पन्न और उर्वरा मिलेगी और वहाँ तुमारे व्यक्तित्व को पूर्णता प्राप्त हो सकती है। इस पर कालिदास कहता है कि "नयी भूमि सूखा भी तो दे सकती है।"[76]

इस वार्तालाप से एक बात स्पष्ट होती है कि कालिदास का व्यक्तित्व उज्जयिनी जाने के लिए तैय्यार नहीं है और वह वहाँ जाकर टूटने की ही संभावना है। कालिदास के खण्डित व्यक्तित्व का अंकन नाटक के तीसरे अंक में अत्यंत मार्मिक शब्दों मैं व्यक्त किया है। कश्मीर से वापस लौटने वाला और मल्लिका के घर में प्रवेश करके अपनी कैफियत उसके सामने प्रस्तुत करने वाले कालिदास का व्यक्तित्व पूरी तरह से खंडित व्यक्तित्व है - "जिस कल की मुझे प्रतीक्षा थी, वह कल कभी नहीं आया और मैं धीरे धीरे खण्डित होता गया, होता गया। और एक दिन····एक दिन मैंने पाया कि मैं सर्वथा टूटा हूँ।"[77] कालिदास के खण्डित व्यक्तित्व का अंकन इससे और सुन्दर नहीं हो सकता है। डॉ·तुकाराम रामचंद्र पाटील के अनुसार,

"कालिदास परिस्थिति के विचित्र बवंडर में फँसकर द्वन्द्वग्रस्त, आत्महन्ता, पराजित, थका-हारा बनकर खण्ड-खण्ड हो जाता है।"[78] इस संदर्भ में कालिदास के खण्डित व्यक्तित्व को डॉ·पाटील ने आकृति के द्वारा इसप्रकार दर्शाया है।[79]

कालिदास के खण्डित-व्यक्तित्व का आलेख

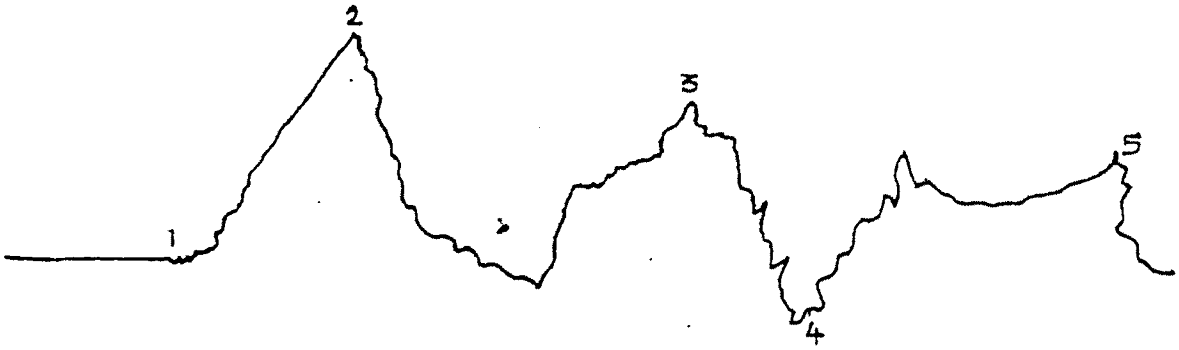

1. ग्राम-प्रांतर और मल्लिका से बिछुड़न
2. प्रियंगुमंजरी से अनचाहा विवाह
3. काश्मीरी शासनयंत्रणा से पलायन
4. 'अथ' से जिंदगी शुरू करने की त्रासदी
5. अनिश्चित दिशा की ओर बहिर्गमन

व्यंग्यात्मक शैली

कालिदास उज्जयिनी से गाँव लौटने पर अपनी प्रेयसी मल्लिका से मिलने के लिए नहीं आती है। इस संदर्भ में एक ओर मल्लिका कुछ दुःखी होती है तो दूसरी ओर अम्बिका कालिदास के प्रति अपना रूखापन व्यक्त करती है। प्रियंगुमंजरी के चले जाने पर वह अपना रूखापन व्यक्त करती है। अम्बिका बीमार है और वह गिरती-सी आसन पर बैठ जाती है। और वहाँ से कुछ पन्ने उठाकर मल्लिका की ओर बढा देती है और कहती है - "लो, "मेघदूत" की पंक्तियाँ पढो। इन्हीं में न कहती थी उसके अन्तर की कोमलता साकार हो उठी है ? आज इस कोमलता का और भी साकार रूप देख लिया ?"[80]

अम्बिका के इस कथन से स्पष्ट है कि, "मेघदूत" में जो कोमलता है ऐसा जो मल्लिका को लगता था उस पर उपर्युक्त शब्दों में अम्बिका ने व्यंग्य किया है। कालिदास का हृदय कोमल नहीं बल्कि कठोर है, रूक्ष है ऐसा अम्बिका का दावा है।

अम्बिका यह भी कहती है कि घर का परिष्कार करने की कल्पना ने कालिदास की प्रभुता और संपदा दोनों का परिचय करा दिया है। कालिदास की तरकीब है घर की भित्तियों का परिसंस्कार होने पर मल्लिका कालिदास के यहाँ परिचारिका बनकर रह सकती है ऐसा भी अम्बिका कहती है और व्यंग्यात्मक शैली में कहती है, "अम्बिका इससे बडा और क्या सौभाग्य तुम्हे चाहिए ?[81] अम्बिका के माध्यम से नाटककार ने व्यंग्यात्मक शैली में अप्रत्यक्षतया कालिदास के चरित्र-चित्रण पर प्रकाश डाला है जो उनके नाट्य-कला की विशिष्टता है।

समीक्षकों की निगाहों में कालिदास

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक का सर्वोच्च पात्र कालिदास है। मोहन राकेश द्वारा चित्रित कालिदास के बारे में समीक्षकों के मत को देखना उचित है क्योंकि इससे राकेश की पात्र-सृष्टि पर और अधिक सोचा जा सकता है। निम्नलिखित अभिमत दृष्टव्य हैं -

डॉ॰गोविंद चातक

आज के संदर्भ में कालिदास इसीलिए सार्थक लगता है। उसे हम अपने युग की विडम्बनाओं के बीच खड़ा पाते हैं। अपने मूल और परिवेश से उखाड़कर वह अकेलेपन, संत्रास और संबंधहीनता के जिस वातावरण में धकेल दिया जाता है, वह आधुनिक मानव की नियति बन गया है।[82]

डॉ॰लक्ष्मीराय

"आषाढ़ का एक दिन" में सर्जक कलाकार के दायित्व और आजीविका के प्रश्न को लेकर कालिदास में जो द्वंद्व दिखायी देता है, इसको राकेश ने अपने जीवन में जिया था।"[83]

"कालिदास का द्वन्द ही आज के साहित्यकार का द्वंद है जिसके बीच उसका व्यक्तित्व खंडित, द्विविधा-ग्रस्त, विभाजित, विवश एवं आकुल प्रतीत होता है।"[84]

"आज के लेखक के सामने शासन के हाथों बिक जाने की आशंका बनी हुई है। एक ओर उसका लेखन है और दूसरी ओर शासकीय प्रलोभन। हमारे युग में यह समस्या जितनी भयावह हो गयी है, उसका सही प्रक्षेपण कालिदास के माध्यम से हुआ है।"[85]

डॉ॰ (श्रीमती) रीता कुमार

"वस्तुतः राकेश द्वारा चित्रित कालिदास का चरित्र विश्वसनीय और मानवीय है। अति संवेदनशील व्यक्तित्व ही महान रचनाएँ दे सकता है और अपने व्यक्तिगत जीवन में भी सदैव असफल ही रहता है। वस्तुतः कालिदास का व्यक्तित्व उन तीव्र संवेदनाओं से निर्मित है, जो व्यक्ति को सृजनशील तो बनाती हैं पर आत्महन्ता प्रवृत्तियों की ओर भी मोड़ देती है। इस दृष्टि से "आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास स्वयं राकेश का पर्याय बन जाता है।"[86]

डॉ॰ वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता

"मोहन राकेश ने "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में ऐतिहासिक व्यक्तित्व को लेकर भी कथा कल्पित ही रखी। इस नाटक में कालिदास और मातृगुप्त जैसे नाम, गुप्तवंश से कालिदास के सम्बन्ध जैसे प्रसंगों तथा कालिदास के ग्रंथों की विषय-वस्तु ही ऐतिहासिक है। इसके अलावा कुछ भी ऐतिहासिक नहीं है।"[87]

"कालिदास के कृतित्व से उद्घाटित उसके व्यक्तित्व को रूप देकर उसे आज तक की सृजनात्मक प्रतिभा के लिए प्रतीक रूप में प्रयोग करना इस नाटक की सबसे महत्वपूर्ण तथा सटीक युक्ति रही है। इससे आधुनिक साहित्यकार के द्वन्द को अभिव्यक्ति मिली है तथा इतिहास स्थित कालिदास को भी मानवीय स्तर प्राप्त हुआ है। यह नाटक की कमजोरी नही, एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।"[88]

डॉ॰ब्रजकिशोर

"कालिदास का संश्लिष्ट व्यक्तित्व,उसका अन्तर्द्वन्द, अपने आपको मौलिक और विशिष्ट साहित्यकार के रूप में स्थापित करने की छटपटाहट वस्तुतः स्वयं राकेश ने मानसिक आलोडन-विलोड़न आत्मसंघर्ष और इस रूप में आधुनिक साहित्यकार की अवशता और तनावों की ही अभिव्यक्ति है।"[89]

डॉ॰गजानन सुर्वे

"मोहन राकेश के "आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास भले ही आधुनिक कवि हो, समसामयिक परिस्थिति की देन हो, मानवीय धरातल पर उसकी सृष्टि स्वाभाविक हो, रंगमंच की दृष्टि से उसकी योजना कलात्मक हो, या यों कहे कि इस कालिदास में नाटककार का ही व्यक्तित्व प्रतिपादित हुआ हो, सांस्कृतिक धरातल पर यह कालिदास खरा नहीं उतरता है, नाटककार का यह कालिदास ‡अर्थात पात्र रचना‡ सांस्कृतिक मूल्य विघटन का ही द्योतक है।"[10]

उपर्युक्त समीक्षकों के अभिमत से कहा जा सकता है कि कालिदास का चरित्र-सृष्टि के बारे में विद्वानो में अलग-अलग मत दिखाई पडते हैं और ऐसा लगता है कि जिस प्रकार मूल कालिदास की जीवनी विवादास्पद है उस प्रकार आलोचकों के मत भी विवादास्पद हैं। मोहन राकेश के कालिदास के बारे में निश्चित निर्णय करना कठिन है।

रंगमंचीय बोध

हमारे लघु-शोध-प्रबंध का मुख्य प्रतिपाद्य कालिदास का चरित्र-चित्रण में अन्य पात्रों का जो कुछ सहयोग है उसका संकेत करना है। अतः रंगमंचीय बोध में कालिदास के चरित्र के प्रमुखता के साथ ही साथ अन्य पात्रों - विशेषतः अम्बिका, मल्लिका, विलोम, मातुल, प्रियंगुमंजरी आदि का भी संक्षेप में रंगमंचीय योगदान प्रस्तुत करना हमारा उद्देश्य है।

इस रंगमंचीय बोध में मुख्यतया मंचसज्जा, कालिदास तथा तदनुषंगिक पात्रों की अभिनेयता, ध्वनियोजना, प्रकाश योजना, दर्शकीय संवेदना आदि का भी विवेचन-विश्लेषण करना भी हमारा उद्दिष्ट है।

मंच-सज्जा

मोहन राकेश ने अपने सभी नाटकों में आवश्यक रंगसंकेत दिये हैं, जो मुख्यतया दिग्दर्शक और रंगकर्मियों के लिए विशेष उपयुक्त है। "आषाढ़ का एक दिन" नाटक के रंगसंकेत भी विशेष महत्वपूर्ण हैं।

मोहन राकेश का "आषाढ़ का एक दिन" नाटक तीन अंकों में विभाजित है। लेकिन इस नाटक का दृश्यविधान एक ही है और वह है अम्बिका का पुराना प्रकोष्ठ।

भारत ग़ामीण देश है और ग्रामीण वातावरण को प्रस्तुत करने की दृष्टि से नाटककार मोहन राकेश ने "आषाढ़ का एक दिन" की मंचसज्जा है।

प्रथम अंक में नाटककार ने इसका संकेत इसप्रकार किया है एक साधारण प्रकोष्ठ है उसकी दीवारे लकडी की हैं, और निचले भाग में मिट्टी से पोती गयी हैं। बीच-बीच में गेरू से स्वस्तिक के चिह्न बने हैं। प्रकोष्ठ के सामने का दरवाजा अँधेरी-सी ड्योढी में खुलता है। उसे दोनों ओर छोटे-छोटे ताक में मिट्टी के बुझे हुए दीये रखे हैं। बायी ओर का दरवाजा दूसरे प्रकोष्ठ में जाने के लिए खुल जाते पर उस प्रकोष्ठ में बिछे हुए तल्प का एक कोना नजर आता है।

दरवाजों के किवाड़ भी मिट्टी से पोते गये हैं। उन पर गेरू और हल्दी से कमल तथा शंख बनाये गये हैं। दायी ओर झरोखा है। वहाँ से बीच-बीच में कौंधती हुई बिजली दिखायी देती है। ग्रामीण वातावरण होने के कारण प्रकोष्ठ में एक चूल्हा है, उसके आसपास मिट्टी और कांसे के बर्तन सहेजकर रखे हैं। तीन-चार बड़े-बड़े कुम्भ भी रखे गये हैं, जिन पर कालिख और काई जमी है। उन्हें कुशा से ढककर ऊपर पत्थर रख दिये गये हैं। इस प्रकोष्ठ में झरोखे से सटा हुआ

लकडी का आसन है। उस पर वाघ-छाल बिछी है। चूल्हे के नजदिक दो-एक चौकियाँ पडी हैं। उन्ही में से एक पर अम्बिका धान फटक रही है वह अपनी बेटी मल्लिका का इंतजार कर रही है। प्रकोष्ठ के सामने का दरवाजा खुलने पर मल्लिका गीले वस्त्रों में काँपती सिमटती अंदर आती हैं। अम्बिका आँखे झुकाये व्यस्त रहती है।[91]

इसमें संदेह नहीं कि मोहन राकेश ने भारतीय संस्कृति और ग्रामीण वातावरण को ध्यान मे रखकर प्रकोष्ठ और आस-पास का यथार्थ वर्णन किया है और मंच-सज्जा देखकर ऐसा लगता है कि ग्रामीण की वास्तविक स्थिति ऐसी ही है।

नाटक के दूसरे अंक में, पहले अंक में जिस प्रकोष्ठ की कल्पना की गयी है, वही प्रकोष्ठ दिखायी देता है। लेकिन अब प्रकोष्ठ की अवस्था में पहले से कही अंतर आ गया है। नाटककार के द्वारा दिये गये रंग-संकेतों के अनुसार प्रकोष्ठ की लिपाई कई स्थानों से उखड़ रही है। गेरू से ढते हुए स्वस्तिक, शंख और कमल अब बुझे-बुझे से हैं। चूल्हे के निकट पहले से बहुत कम बर्तन हैं। कुम्भ केवल दो हैं और उन पर बीच-तक काई जमी है। झरोखे के पास के आसन पर कुछ लिखे हुए भोजपत्र बिखरे हैं, कुछ भोजपत्र एक रेशमी वस्त्र में बँधे हैं। आसन के निकट एक टूटा मोढ़ा रखा गया है। और मल्लिका उस पर बैठकर खरल में औषध पीस रही है। अन्दर के प्रकोष्ठ में अम्बिका तल्प पर लेटी है और बीच-बीच पार्श्व बदल रही है।[92]

उपर्युक्त दृश्यविधान से कुछ बातें सामने आ जाती हैं जो इसप्रकार हैं

1· कालिदास के उज्जयिनी चले जाने पर मल्लिका की स्थिति बहुत ही हृदयद्रावक बन गयी है।

2· पहले अंक में दिखाई देनेवाला प्रकोष्ठ अब कुछ मात्रा में टूट गया है। विशेषतः उसकी लिपाई तथा स्वस्तिक, शंख, कमल आदि टूटने की अवस्था में हैं। मोढ़ा टूट गया है और मल्लिका और अम्बिका के वस्त्र फटे हुए हैं और वस्त्र खंडों से जोडे गये है। इन बातों से स्पष्ट है कि मल्लिका के प्रकोष्ठ की अब बुरी हालत हुई है। प्रकोष्ठ की लिपाई का उखड़ जाना और दूसरे वस्तुओं

का टूट जाना मल्लिका के खंडित व्यक्तित्व को दर्शाने का सूचक है।

3· अपने प्रियकर कालिदास के विदा होने से वह भी कुछ टूटी हुई दिखाई देती है। इन सबके टूटने में प्रमुख कारण आर्थिक दशा भी है।

4· इस दृश्य मे यह भी दर्शाया गया है कि उसकी माँ अम्बिका बीमार पडी है और अपनी माँ को दवा-दारू देने का प्रयास बेटी के नाते मल्लिका कर रही है।

5· एक ओर कालिदास का उज्जयिनी जाना और दूसरी ओर मल्लिका की माँ का बीमार पड जातना ये तो मल्लिका की घटनाएँ हैं इन घटनाओं को दर्शाने के लिए ही नाटककार ने रंगसंकेत द्वारा दृश्यविधान का आयोजन किया है।

6· प्रथम अंक और द्वितीय अंक के प्रकोष्ठ को देखने से दर्शक यह भी जान ले सकते हैं कि परिस्थिति में भी कुछ अंतर आ गया है। और इसीकारण दृश्यविधान भी परिस्थिति के अनुकूल बनाया गया है। यथार्थवादी रंगमंच की दृष्टि से यह दृश्य-विधान बड़ा ही मार्मिक है और परिणामकारी है।

नाटक के प्रथम तीन अंक, द्वितीय अंक तथा तृतीय अंक में एक ही प्रकोष्ठ है लेकिन प्रत्येक अंक में प्रकोष्ठ की गिरी-टूटी अवस्था को ही रंगसंकेत मे संकेतित किया गया है। नाटक के तीसरे अंक में यह दर्शाया गया है कि प्रकोष्ठ की स्थिति में पहले से भारी परितर्वन हुआ है। यहाँ हर वस्तु कुम्भ है और उसका कोना टूटा हुआ है। आसन का स्थान भी हटाया गया है। और उस पर वाघ-छाल भी नहीं है। दीवारों पर से स्वस्तिक आदि के चिह्न बुझ चुके हैं। चूल्हे के पास सिर्फ दो-एक बर्तन बचे हुए हैं और उन पर स्याही चढी हुई है। एक कोने में फटे हुए मैले वस्त्र जमा हैं।

प्रकोष्ठ की मंजसज्जा पर नाटककार ने ही टिप्पणी की है कि चारों ओर विचित्र अराजकता व्याप्त प्रतीत होती है।[93] इसमें संदेह नहीं कि नाटक के दूसरे अंक में बीमार पडी अम्बिका अब नहीं रही है। उसकी मृत्यु हो गयी है।

अभिनेयता (क्रिया-व्यापार)

अभिनेयता नाटक का प्राणतत्व है। कालिदास तथा तद्नुषंगिक पात्रों के अभिनय के बारे में इस प्रकार प्रकाश डाला जा सकता है, जिसमें ध्वनि और प्रकाश-योजना का भी विशेष योगदान रहा है।

कालिदास की काव्य-प्रतिभा की पहचान

नाटक में वातावरण निर्मिति की दृष्टि से ध्वनिसंकेतों की आवश्यकता होती है। मोहन राकेश ने "आषाढ़ का एक दिन" नाटक के प्रथम अंक में सर्व प्रथमध्वनिसंकेत का उल्लेख किया है, उन्होंने लिखा है कि पर्दा उठने से पहले हल्का-हल्का मेघ-गर्जन और वर्षा का शब्द सुनाई देन लगता है। पर्दा उठने के उपरान्त भी यह मेघगर्जन और वर्षा का शब्द सुनाई देने लगता है और धीरे-धीरे मंद पडकर विलीन हो जाता है। इस ध्वनिसंकेत के द्वारा नाटककार ने वर्षा ऋतु में होने वाली बारिश का और मेघगर्जन की आवाज का संकेत कर तद्नुषंगिक वातावरण की निर्मिति की है।

यहाँ नाटककार ने यह भी दर्शाया है कि मल्लिका अपना भावुक हृदय अपनी माँ के सामने उंडेल देती है। उसका प्रत्येक शब्द उसका प्रत्येक वाक्य काव्यमय है। उसकी भावुकता उसकी युवावस्था के अनुकूल है। वह भावुकता शब्दांकित करती है। वह यह भी कहती है कि मेरे सब वस्त्र भीग गये और सूखे वस्त्रों के बारे में माँ से पूछती है। इतना ही नहीं इस तरह खडी रहने से जुड़ा होने की संभावना व्यक्त करती है फिर भी माँ बोलती नहीं है।

अम्बिका आक्रोशपूर्ण दृष्टि से मल्लिका की ओर देखती है। इसप्रकार माँ अम्बिका का रुखापन और बेटी मल्लिका का यौवन-सुलभ भावुक मन रंगमंच पर सहज ही दिखाई देता है। मानव जीवन में निहीत यह विरोधाभस जीवन में निहीत यह विरोधाभास जीवन की सच्चाई ही है।

यहाँ विशेष बात यह है कि मल्लिका अपने गीले वस्त्र बदलने के लिए अंदर चली जाती है। और प्रकोष्ठ से मल्लिका के कुछ शब्द सुनाई देते हैं और

बीच-बीच में उसकी झलक भी दिखाई देती है। इसी हालत में मल्लिका कालिदास विरचित मेघदूत काव्य की निम्नलिखित पंक्तियाँ उद्धृत करती है -

> "कुवलयदलनीलैरुन्नतैस्तोयनम्रैः
> मृदुपवनविधूतैर्मन्दमन्दं चलद्भि···अपहृतमिव
> चेतस्तोयदैः सेन्द्रचापैः···पथिकजनवधूनां तद्वियोगाकुलानाम्।[93]

यद्यपि यहाँ कालिदास प्रत्यक्षतया रंगमंच पर उपस्थित नहीं दिखाई देता है। फिर भी मल्लिका द्वारा उद्धृत उन पंक्तियों में से कालिदास की काव्य प्रतिभा का परिचय मिल जाता है और कालिदास संस्कृत का श्रेष्ठ कवि है। यह बात दर्शकों पर असर डालती है। कालिदास का कविहृदय यहाँ प्रेक्षक सहज ही अनुमानित कर सकते हैं। प्रकृति प्रेमी कालिदास का यहाँ अप्रत्यक्ष दर्शन उसके चरित्र-चित्रण की एक विशिष्टता है।

<u>दिलोजान कालिदास</u>

नाटक के प्रथम अंक के कालिदास के प्रत्यक्ष दर्शन तब होते हैं जब वह आहत हरिणशावक को बाँहों में लिये पुकारता हुआ मल्लिका के प्रकोष्ठ में प्रवेश करता है। उस समय हरिणशावक के शरीर पर से लहू टपकता दिखाई देता है। यहाँ नाटककार ने यह दर्शाया है कि कालिदास उस हरिणशावक को देखकर व्याकुल होता है लेकिन यह भी सोचता है कि बाण से आहत हुए इस हरिणशावक को नये प्राण मिल जायेगे। कालिदास के शब्दों में - "हम जिएँगे हरिणशावक। जिएँगे न ? एक बाण से आहत होकर हम प्राण नहीं देंगे। हमारा शरीर कोमल है, तो क्या हुआ ? हम पीड़ा सह सकते हैं। एक बाण प्राण ले सकता है, तो उँगलियों का कोमल स्पर्श प्राण दे भी सकता है। हम कोमल अस्तारण पर विश्राम करेंगे। हमारे अंगों पर घृत का लेप होगा। कल हम फिर वनस्थली में घूमेंगे। कोमल दूर्वा खाएँगे। खाएँगे न ?"[95]

कालिदास के इस सल्लाप में प्रेक्षक कालिदास का पशुप्रेम और उसका कोमल हृदय सहज ही देख सकते हैं। तत्पश्चात कालिदास मल्लिका से दूध लाने के लिए कहता है। मल्लिका के दूध लाने पर कालिदास मल्लिका से कहता है कि, "तुम इसे बाँहों में ले लो और मैं उसे दूध पिलाता हूँ।" इसप्रकार नाटककार के नाट्यसंकेतों के माध्यम से तथा अभिनेता और अभिनेत्री के अभिनय से कालिदास के चरित्र की एक विशेषता पशुप्रेमी और कोमल हृदयी कालिदास हमारे सामने खडा होता है।

स्वाभिमानी कालिदास

प्रस्तुत नाटक में प्रथम अंक में कालिदास का स्वाभिमानी स्वभाव, यद्यपि कालिदास रंगमंच पर नहीं दिखाई देता है फिर भी कालिदास का मूल स्वर मातुल के मूँह से उद्धृत किया है जो उल्लेखनीय है, "मैं राजकीय मुद्राओं से क्रीत होने के लिए नहीं हूँ।"[96] इस वाक्य से और मातुल अभिनय से कालिदास के स्वाभिमान की सहज परख दर्शकों को हो सकती है। कालिदास के इस वाक्य में मातुल द्वारा आरोह-अवरोह में अभिव्यक्ति विशेष उल्लेखनीय है।

कालिदास और विलोम

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक में कालिदास और विलोम दो ऐसे पात्र हैं जो स्वभाव और कार्य से एक दूसरे से विपरीत है। यहाँ नाटककार ने दोनों की विपरीतता दिखाते हुए उन्मुक्त का एक विशिष्ट प्रयोग रंगमंच की दृष्टि से किया है। उल्मुक का मतलब है मशाल या अग्निकाष्ठ। यहाँ नाटककार ने अग्निकाष्ठ का प्रयोग करके उसके प्रकाश में दोनों पात्रों का स्वभाव और कार्य की भिन्नता को दर्शाया है। जिसकी वजह से प्रेक्षक यह देख सकते हैं कि यह दोनों पात्र प्रकृति से कितने भिन्न हैं।

इस नाटक मे विलोम विदग्धतापूमर्ण दृष्टि से कालिदास की ओर देखता है और यह दिखाने की कोशिश करता है कि मल्लिका को छोडकर अगर कालिदास उज्जयिनी जाएगा तो मल्लिका की स्थिति क्या होगी यही मूलभूत प्रश्न विलोम का है। इस संदर्भ में कालिदास इतना ही कहता है कि कालिदास ग्राम-प्रान्तर छोडकर

उज्जयिनी जाने का तनिक भी मोह उसको नहीं है।

यहाँ नाटककार ने दर्शाया है कि उपुर्यक्त प्रसंग में विलोम उल्मुक कालिदास के मुख के निकट ले जाता है और उससे कहता है कि मोह साधारण व्यक्ति को होता है, असाधारण व्यक्ति को नहीं।

प्रस्तुत नाटक में उल्मुक के प्रकाश में यह भी दर्शाया गया है कि रंगमंच पर कालिदास विलोम और मल्लिका दिखाई पडते हैं और यह भी दर्शाया गया है कि मल्लिका विलोम से घृणा करती है और कालिदास से प्यार करती है। इस नाटक में बार-बार उल्मुक का प्रयोग मुख्यतया कालिदास के निकट ले जाकर किया गया है और उसकी मुद्रा प्रेक्षकों को स्पष्ट रूप से दिखाई पडे। अपने व्यंग्यात्मक शब्दों में विलोम कालिदास से कहताहै कि "तुम्हारी यात्रा शुभ हो कालिदास। तुम जानते हो विलोम तुम्हारा भी हितचिन्तक है।

इस बात पर कालिदास भी व्यंग्यात्मक रूप में कहता है कि तुम्हें मुझसे अधिक कौन जान सकता है ? कालिदास के इस प्रश्न पर विलोम के कंठ से तिरस्कार पूर्ण हँसी का स्वर निकलता है और वह मल्लिका की ओर देखता है और कहता है, "अनचाहा अतिथि संभवतः फिर भी कभी आ पहुँचे।[96] इसमे संदेह नही कि इस प्रसंग मे विलोम का पार्ट अभिनय की दृष्टि से ज्यादा व्यंग्यपूर्ण है। और कालिदास उज्जयिनी जाने पर मल्लिका की संभाव्य दुर्दशा की संकेतपूर्ण अभिव्यंजना है।

कालिदास और विलोम के स्वभाव की विपरीतता तथा मल्लिका का कालिदास के प्रति प्रेम और विलोम के प्रति घृणा दर्शनीय है। उल्मुक के प्रकाश के माध्यम से नाटककार ने वातावरण की निर्मिति की है जो उचित ही है।

<u>कालिदास की बिदाई</u>

नाटक के प्रथम अंक के अंत में नाटककार मोहन राकेश ने यह दर्शाया है कि कालिदास मल्लिका से विदा होते समय क्षण भर अपनी आँखे मूँदे रहता है और फिर झटके से चला जाता है और मल्लिका के हाथों में मुँह छिपाकर आसन

में जा बैठती है। इसमें कालिदास और मल्लिका का अभिनय दुःख पूर्ण है। एक दुःखी अंतःकरण से अपनी प्रेयसी से विदा होता है तो दूसरी ओर मल्लिका कालिदास के विदा होने के कारण रोती रहती है। मल्लिका का यह रोना भी कालिदास के प्रति उसके प्रेम का ही घोतक है - "मैं रो नहीं रही हूँ माँ। मेरी आँखों से जो बरस रहा है, यह दुःख नहीं है। यह सुख है माँ, सुख····।"[97]

कालिदास के अस्तित्व की पहचान

प्रस्तुत नाटक में दूसरे अंक में नाटककार ने रंग संकेत में घोडों के टापों के शब्दों का उल्लेख कर कालिदास के आगमन की सूचना दी है। निक्षेप मल्लिका से स्पष्ट कहता है कि उसने जिस आकृति को घोडों पर जाते देखा है वह और कोई नहीं कालिदास ही है। निक्षेप के शब्दों में - "मुझे विश्वास है, वे स्वयं कालिदास है। निक्षेप यह भी स्पष्ट कर देता है कि उसने कालिदास को अपनी आँखो से देखा है।"[98] निक्षेप यह भी बताता है कि - "कालिदास घोडा दौड़ाते हुए पर्वत-शिखर की ओर गये हैं। उनकी वेशभूषा राजसी है। इस वेशभूषा में भले ही कालिदास को कोई नहीं पहचान सकता है लेकिन निक्षेप अवश्य कालिदास को पहचान सकता है। इस संदर्भ में वह कहता है उसकी आँखें भ्रांत नहीं हो सकती।"[100]

निक्षेप यह भी स्पष्ट करता है कि कालिदास के साथ कुछ राज्य-कर्मचारी भी निश्चय ही आये होंगे।

जिस प्रकार नाटक के दूसरे अंक में घोडों की टापों के शब्द कालिदास के उज्जयिनी से ग्राम-प्रान्तर आने की सूचना देते हैं उसीप्रकार इस अंक के अंत ये घोडों के टापों के शब्द यह सूचना देते हैं कि कालिदास उज्जयिनी वापस लौट रहा है।

इस समय मल्लिका की ऐसी स्थिति हो जाती है कि मानों उसकी वाणी ही खो गई हो।

अपरिचित कालिदास

नाटक के तीसरे अंक में कालिदास की वापसी इस तरह दर्शायी है - बिजली बीच-बीच में कौंधती है, मेघ-गर्जन सुनायी देता है और ड्योढी का द्वार धीरे खुलता है। कालिदास राजकीय वस्त्रों में परंतु क्षत-विक्षत-सा द्वार खोलकर ड्योढी में ही खड़ा रहता है। मल्लिका किवाड़ खुलने के शब्द से उधर देखती है और सहसा उठ खडी होती है। कालिदास एक पग अन्दर रखता है और मल्लिका जड़वत उसे देखती रहती है।

यह प्रसंग निश्चय ही रंगमंच की दृष्टि से परिणामकारी है। कालिदास की इसी वापसी में यह दिखाई देता है कि यद्यपि कालिदास राजसी वेशभूषा में खडा है फिर भी वह क्षत-विक्षत बन गया है। उसका पुराना व्यक्तित्व अब कुछ वर्षों बाद खंडित हुआ है। उसके व्यक्तित्व में भारी परिवर्तन हुआ है।

कहाँ बचपन का प्रकृति-प्रेमी कालिदास, कहाँ "ऋतुसंहार" आदि ग्रंथों की रचना करने वाला प्रतिभासंपन्न कालिदास। कालिदास के ये दोनों व्यक्तित्व क्षत-विक्षत से हो गये हैं। इतना ही नहीं राजसी वेशभूषा में होकर भी वह किसी वक्त देश का राजा या शासक नहीं रहा है बल्कि एक अभावग्रस्त टूटा हुआ साधारण जन के रूप में ही दिखाई देता है। मल्लिका और कालिदास दोनों एक-दूसरे को देखते हैं और दोनों को ही महसूस होता है कि दोनों एक-दूसरे को अपरिचित जैसे लगते हैं। यहाँ नाटककार ने कालिदास को एक साधारण व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है, जो नाटककार की प्रतिभा और नाटककार के नाटक लिखने के उद्देश्य का एक नया प्रतिमान है।

कालिदास का पलायन

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक का कालिदास एक ऐसा पात्र है जो परिस्थितियों से लड़ते-झगडते तंग आ जाता है। पुनश्च मल्लिका से गृहस्थी जीवन बिताने की बात करता है लेकिन अन्दर से बच्ची की रोने की आवाज सुनकर मल्लिका

अन्दर जाती है ओर कालिदास "समय किसी की प्रतिक्षा नहीं करता है" कहकर तुरन्त मल्लिका के प्रकोष्ठ से बाहर चला जाता है। मल्लिका बाहर आती है तो उसे कालिदास का बहिर्गमन दिखाई पडता है। वह जोर से पुकारती है "कालिदास।[101] यहाँ हम मंच पर देखते हैं कि कालिदास का पलायन और मल्लिका की पुकार दोनों ही दुःखपूर्ण जीवन की व्यथा गाता है। उस कारुणिक दृश्य को देखकर दर्शक भी दुःखी होते हैं। नाटक का अंक शोकान्त है।

दर्शकीय संवेदनाएँ

नाटक रंगमंच पर खेला जाता है और दर्शक गण ही रंगमंच पर देखकर अपनी प्रतिक्रियाएँ उत्स्फूर्त रूप में व्यक्त करता है। यहाँ दर्शकों की कुछ प्रतिक्रियाएँ पेश की जा रही हैं।

डॉ॰जयदेव तनेजा

"राजिन्दर नाथ के निर्देशन में श्रीराम सेन्टर के रंग-मण्डल द्वारा 1983 की समाप्ति से पूर्व प्रस्तुत की प्रस्तुति राकेश के "आषाढ़ का एक दिन" में उभारने की कोशिश की गई। प्रस्तुति साफ-सुथरी, सन्तुलित और रोचक थी। मनोज शर्मा ने कालिदास के अन्तर्विरोधों को विश्वसनीय ढंग से पेश किया तो, सीमा भार्गव ने आस्था और समर्पण की साकार प्रतिमा, भावुक प्रेमिका मल्लिका की मूक वेदना को संवेदनशील ढंग से उभारा। संजीव सहाय का विलोम भी सहज था। प्रतिमा काज़मी की अम्बिका में विवशता-जन्य पीड़ा और मल्लिका के प्रति उपेक्षा भाव के स्थान पर शुरू में कटुता का पुट कुछ ज्यादा था और जफर संजरी के मातुल में कुछ अतिरंजना भी थी। सबीना मेहता सूद का व्यक्तित्व तो प्रियंगुमंजरी को अनुकूल भव्य, सुन्दर और प्रभावशील था किन्तु उनकी हँसी चरित्र से मेल नहीं खाती थी।

कुल मिलाकर "आषाढ़ का एक दिन" की यह प्रस्तुति अपनी कलात्मक सादगी, आलेख के प्रति अधिकाधिक ईमानदारी। नेपथ्य संगीत के प्रभावशील उपयोग और अभिनेताओं के सहज अभिनय के कारण यह सुखद अनुभव सिद्ध हुई।"[102]

डॉ॰सुरेश अवस्थी

डॉ॰ सुरेश अवस्थी के अनुसार इस नाटक (आषाढ़ का एक दिन) में , "साहित्यिक भाषा और उदात्त शैली में लिखे गये पात्रों के लम्बे-लम्बे संवाद, एकालाप और स्वगत-कथन जिस प्रकार के प्रदर्शन में पात्रों की रंगचर्या के साथ एकीभूत हो जाते हैं और उनके व्यापारों और भावों को उद्घाटित और घनीभूत करते हैं, वह अनुभव हिन्दी दर्शक के लिए सर्वथा नवीन है।"[104]

बाबू सम्पूर्णानंद

राजस्थान के गवर्नर भारतीय संस्कृति के व्याख्याता बाबू सम्पूर्णानन्द जयपूर में इस नाटक का अभिनय देखकर बहुत ही रुष्ट हुए। एक बार गवर्नर हाऊस में हिन्दी के कुछ साहित्यकार जब उनसे मिलने गये तो उन्होंने अपना आक्रोश प्रकट करते हुए कहा - "भारतीय संस्कृति के स्तंभ कालिदास की चिन्तन-धारा और दार्शनिकता में बिना स्नान किए जो लोग उन्हें वारांगना प्रेमी और मल्लिका के घर का वासनावश चक्कर काटनेवाला मानते हैं, वे साहित्य, कालिदास और भारतीय संस्कृति के साथ अन्याय करते हैं, क्या हिन्दी साहित्य का इतना स्तर गिर गया?"[105]

कन्हैयालाल नन्दन

"थियेटर ग्रुप" की ओर से हिन्दी के प्रख्यात नाटक "आषाढ़ का एक दिन" को अंग्रेजी में प्रस्तुत किया जा रहा था, जिसका अनुवाद किया था सारा ऐसले ने "वन डे इन आषाढ़" नाम से। इस जिज्ञासा में एक प्रसन्नता भी जुडी हुई थी कि अंग्रेजी नाटक करने वालों के चुनाव की दिशा तो बदली, उन्हें इस बात का एहसास तो हुआ कि हिन्दी में भी कुछ ऐसे नाटक हैं, जिनकी ओर ध्यान दिये बिना भारतीय रंगमंच का अंग बनकर रहने में कठिनाई अनुभव हो सकती है। इस दृष्टि से "थियेटर ग्रुप" का यह प्रयास प्रशंसनीय है कि इससे अंग्रेज़ियत के बाडे में बन्द, हिन्दी के प्रति मुँह बिचकाने वाले दर्शक-समूह के लिए एक श्रेष्ठ हिन्दी नाटक को देख सकने का अवसर प्रदान किया गया और इस प्रकार रचनात्मक स्तर पर संवेदनाओं की ग्रहणशीलता में आडे आने वाली अंग्रेजियत की खाई को

पार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बढाया गया।

जिस सहृदयता और अनुभूतियों की कोमलता को कालिदास के पात्र को व्यक्त करना है वह सब औपचारिक ढंग से बोली गयी ड्रामाई अंग्रेजी मे डूबकर रह गयी। और यह धारणा मेरी अंत तक न टूट सकी कि कालिदास को जिस संवेदनशील और अंत मे जिस गहन अंतर्द्वन्द में ग्रस्त दिखाना चाहिए था, उसका यहाँ दूर तक कही नामोनिशान भी नहीं था।

अम्बिका के रूप में दीना पाठक से सफलता की आशा न करना, दीना पाठक की अभिनय-क्षमता के प्रति अनभिज्ञता दिखाना है। मातुल के रूप में मिनू धाई का कार्य संतोषजनक था, किन्तु बाकी सभी पात्र अति-नाटकीयता और फैन्सी ड्रेस प्रदर्शन का अंग अधिक लगे, "वन डे इन आषाढ़" का अंग कम। नाटक देखने के बाद जब घर लौटा, तो मन में कालिदास की अंग्रेजी वाक्यावली गुदगुदी पैदा कर रही थी।[105]

<u>निष्कर्ष</u>

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि,

1· मोहन राकेश ने अपने प्रसिद्ध नाटक "आषाढ़ का एक दिन" के कालिदास को इतिहास की पृष्ठभूमि पर चित्रित किया है।

2· "आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास इतिहास-सम्मत कम है और काल्पनिक ज्यादा है। लेकिन इस कल्पना में नाटककार की दृष्टि इतिहास के अछूत पन्नों को जोड़ना है।

3· ऐतिहासिक महाकवि कालिदास अपनी असाधारण प्रतिभा के कारण विश्वविख्यात हैं और उसका आदरणीय व्यक्तित्व हमारे सामने उभर आता है लेकिन "आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास दुर्बल और कमजोर हैं क्योंकि महान व्यक्ति में भी कुछ दुर्बलताएँ , कुछ न्यूनताएँ, कुछ अभाव जरूर होते हैं।

4. यद्यपि इतिहासकारों ने अनेक जगह कालिदास के साहित्य की प्रेरणा उसकी पत्नी गुप्तवंशीय राजदुहिता प्रियंगुमंजरी माना है लेकिन मोहन राकेश ने प्रेयसी मल्लिका को कालिदास के साहित्य का प्रेरणास्त्रोत माना है। लेखक की यह नयी दृष्टि है।

5. आज का साहित्यकार अभावग्रस्त है। उसको राजसम्मान का मोह हो सकता हैं और राजनीति से ऊबकर उसका मोहभंग भी हो सकता है। इस दृष्टि से "आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास आधुनिक है।

6. नाटककार मोहन राकेश ने ऐतिहासिक मिथक को तोड़कर "आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास चित्रित किया है और मानवीय धरातल पर मिथक की नयी व्याख्या प्रस्तुत की है।

7. निर्देशकों ने नाटक की रंगमंचीय प्रस्तुति में कालिदास को अपने-अपने निर्देशन के अनुसार मंच पर उपस्थित किया है, यह एक विशेष उपलब्धि है।

संदर्भ

1· आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश, पृ·8, 18, संस्क·1986
2· वही, पृ·23
3· वही, पृ·13
4· वही, पृ· 20-21
5· वही, पृ·42
6· वही, पृ·37
7· वही, पृ·45
8· वही, पृ·69
9· वही, पृ·51, 60
10· वही, पृ·71
11· वही, पृ·101
12· वही, पृ·13
13· वही, पृ·111
14· The Oxford Dictionary of Quotations, P.497, IIIrd Edition 1983.
15· आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश, पृ·8, संस्क·1986
16· वही, पृ·12
17· वही, पृ·13
18· वही, पृ·24
19· वही, पृ·43-44
20· वही, पृ·47-48
21· कामायनी - जयशंकर प्रसाद, पृ·150, संस्क·1994
22· आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश, पृ·94, संस्क·1986
23· वही, पृ·93
24· वही, पृ·105

25· आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश, पृ·93 , संस्क·1986

26· वही, पृ·94

27· वही, पृ·39

28· कामायनी -जयशंकर प्रसाद, पृ· 150, संस्क· 1994

29· आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश, पृ·18, संस्क·1986

30· वही, पृ·19

31· वही, पृ·26

32· वही, पृ·78

33· वही, पृ·70

34· वही, पृ·70

35· वही, पृ·100

36· वही, पृ·100

37· वही, पृ·100-101

38· वही, पृ·100

39· वही, पृ·102

40· वही, पृ·45

41· वही, पृ·69

42· वही, पृ·68

43· वही, पृ·67

44· वही, पृ·102

45· वही, पृ·51

46· वही, पृ·52-58

47· वही, पृ·14-16

48· वही, पृ·84

49· वही, पृ·94

50· वही, पृ·96

51· आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश, पृ·96, संस्क·1986

52· वही, पृ·97-98

53· वही, पृ·98

54· वही, पृ·99

55· वही, पृ·101

56· वही, पृ·103

57· वही, पृ·105-111

58· वही, पृ·14

59· वही, पृ·23

60· वही, पृ·24-25

61· वही, पृ·33

62· वही, पृ·51

63· वही, पृ·71-73

64· वही, पृ·39-40

65· वही, पृ·40

66· वही, पृ·41

67· वही, पृ·27

68· वही, पृ·18

69· वही, पृ·32

70· वही, पृ·32

71· वही, पृ·99

72· वही, पृ·26

73· वही, पृ·29

74· वही, पृ·110

75· वही, पृ·45

76· वही, पृ·45

77· आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश, पृ·101, संस्क·1986

78· समसामयिक हिन्दी नाटकों में खण्डित व्यक्तित्व अंकन - डॉ·तु·रा·पाटील, पृ·106, संस्क·अप्रकाशित शोध-प्रबंध

79· वही, पृ·106

80· आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश, पृ·77, संस्क·1986

81· वही, पृ·77

82· आधुनिक नाटक का मसीहा : मोहन राकेश - डॉ·गोविंद चातक, पृ·39, संस्क·1978

83· आधुनिक हिन्दी नाटक : चरित्र सृष्टि के आयाम - डॉ·लक्ष्मी राय, पृ·377, संस्क·1979

84· वही, पृ·379

85· वही, पृ·379

86· स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : मोहन राकेश के विशेष सन्दर्भ में - डॉ·श्रीमती रीता कुमार, पृ·296, संस्क·1980

87· मोहन राकेश का साहित्य - डॉ·वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता, पृ·21, संस्क·1990

88· वही, पृ·22

89· हिन्दी नाटक और रंगमंच : समकालीन परिदृश्य - डॉ·ब्रजराज किशोर, पृ·35, संस्क·1988

90· स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों का सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ·गजानन सुर्वे, पृ·387-388, संस्क·1987

91· आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश, पृ·5, संस्क·1986

92· वही, पृ·49

93· वही, पृ·87

94· वही, पृ·8

95· वही, पृ· 15

96· वही, पृ·26

97· वही, पृ·39-43

98· वही, पृ·48

99· वही, पृ·54

100· वही, पृ·54-55

101 वही, पृ·95

102· वही, पृ·111

103· हिन्दी रंगकर्म दशा और दिशा - डॉ·जयदेव तनेजा, पृ·167-168, संस्क·1988

104· स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी रंगमंच - डॉ·ओमप्रकाश शर्मा, पृ·193, संस्क·1994

105· आज का हिन्दी नाटक प्रगति और प्रभाव - डॉ·दशरथ ओझा, पृ·59, संस्क·1984